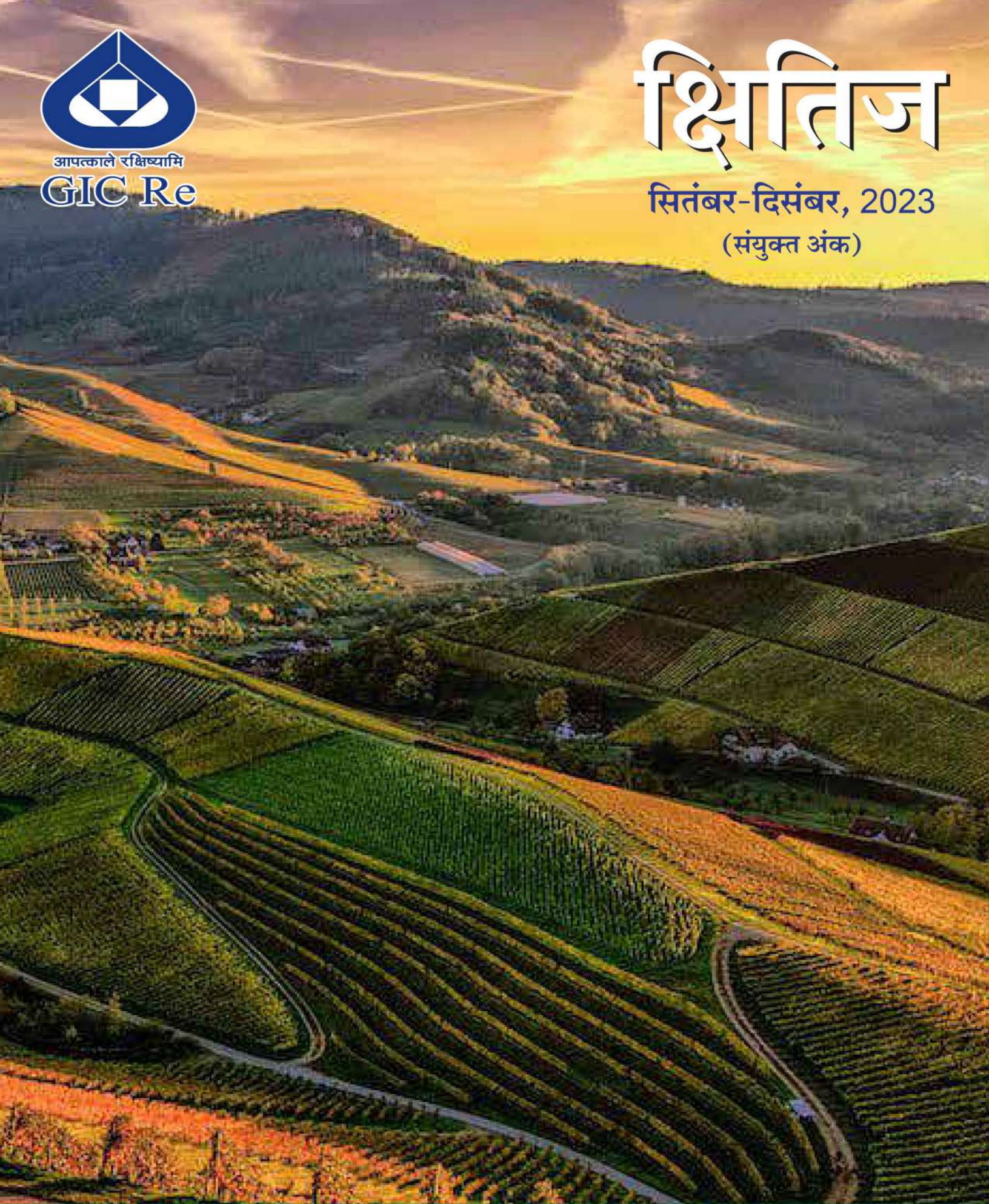




# क्षितिज

सितंबर-दिसंबर, 2023

(संयुक्त अंक)



भारतीय साधारण बीमा निगम, राजभाषा विभाग, सुरक्षा, चर्चगेट, मुंबई - 400 020.

हिंदी दिवस समारोह - 2023



# अनुक्रमणिका

## संरक्षक

श्री एन. रामस्वामी  
ram@gicre.in

## संपादन

श्रीमती जयश्री बालकृष्ण  
jayashrib@gicre.in

श्री राजेश खडतरे  
rajeshk@gicre.in

श्रीमती स्नेहा नायर  
janet@gicre.in

सुश्री अपर्णा सिन्हा  
avsinha@gicre.in

सुश्री इन्दिरा  
indira@gicre.in

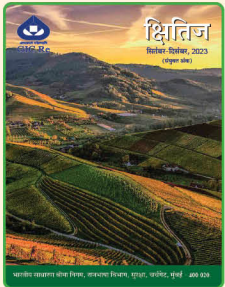
## प्रकाशन समिति

श्री सचिन्द्र साळवी  
श्री देशराज चढार  
श्री मनीष तिवाड़ी

## संपर्क

संपादक  
क्षितिज  
भारतीय साधारण बीमा निगम  
राजभाषा विभाग,  
सुरक्षा, 170, जे. टाटा मार्ग,  
चर्चगेट, मुंबई - 400 020

## मुखपृष्ठ



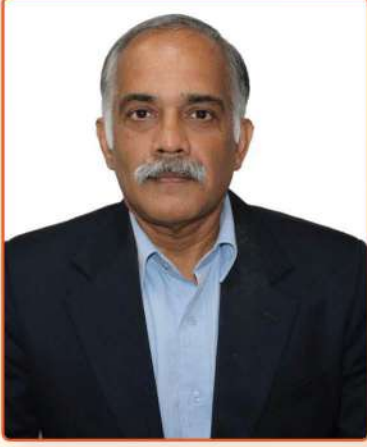
हरा, गुलाबी, नीला, पीला  
क्षितिज हुआ है और सजीला,  
मन में, जलतरंग में उतरा,  
वसुधा का श्रृंगार रंगीला . . .

विषय	लेखन	पृष्ठ सं.
● अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से	एन. रामस्वामी	4
● संपादकीय	अपर्णा सिन्हा	5
● अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का हार्दिक स्वागत	राजभाषा विभाग	6
● निगम में स्वतंत्रता दिवस एवं अन्य गतिविधियाँ	ऊषा कामथ	6
● निगम में सीएसआर गतिविधियाँ	नितेश भीमटे	7
● सिंगापुर अंतरराष्ट्रीय पुनर्बीमा सम्मेलन 2023	सचिन्द्र साळवी	8-9
● 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' - 2023	अजीत बारला	10-11
● प्रोटोकॉल अधिकारी के रूप में अनुभव	आशीष गुप्ता	12
● इंडियन ऑइल नेवी मेरेथॉन	सचिन्द्र साळवी	13
● बीदर में सीसीई	प्रसाद दत्तात्रय गोरे	14
● निगम के प्रधान कार्यालय में राजभाषा पखवाड़ा	इन्दिरा	15
● हिंदी दिवस की झलकियाँ	राजभाषा विभाग	16-19
● 'जाँच अधिकारी एवं प्रस्तुतकर्ता अधिकारी' विषय पर कार्यशाला	अजीत बारला	20
● पुरस्कृत रचनाएँ	विविध	21-27
● वायु प्रदूषण और आपका स्वास्थ्य	डॉ. अनुराग राउळ	27-28
● कार्यस्थल पर दैनिक मुद्दे और उनके वैज्ञानिक उपाय	कुमार गौरव	29
● मेरा श्रीलंका दौरा	सुजाता कांचन	30-31
● जीआइसी री का स्थापना दिवस	विशाखा शिवलकर	32
● कार्मिक समाचार	मानव संसाधन विभाग	32
● निगम में प्रशिक्षण कार्यक्रम	मनाली एम. पोटे	33-34
● जीआइसी री स्थापना दिवस - झलकियाँ	मानव संसाधन विभाग	35
● सितंबर 2023 के वित्तीय परिणाम की समीक्षा	निगमीय संचार विभाग	36

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों से संपादन मंडल या कंपनी का सहमत होना जरूरी नहीं है.

यह अंक निगम की वेबसाइट [www.gicre.in](http://www.gicre.in) पर उपलब्ध है. आप अपनी प्रतिक्रियाएं [rajbhasha@gicre.in](mailto:rajbhasha@gicre.in) पर भेज सकते हैं.

## अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...



प्रिय साथियों,

नव वर्ष, नवीन उमंग और उत्साह के साथ 'क्षितिज' के माध्यम से पहली बार आप सबसे रुबरू होकर प्रसन्नता हो रही है। इसके अलावा, जीआइसी री ने 51 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पूरी की है जो हम सभी के लिए बेहद खुशी और गर्व की बात है।

पिछले कुछ वर्षों से बीमा उद्योग काफ़ी उतार-चढ़ाव भरा रहा है। वैश्विक राजनीतिक संकट, यूरोजोन संकट, मुद्रा व तेल संकट तथा जलवायु परिवर्तन एवं इसके प्रभावों को दुनिया भर में महसूस किया जा रहा है। इनके कारण बाजार में अस्थिरता तथा अनिश्चितताएँ बढ़ी हैं जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव बीमा उद्योग पर भी हो रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति तथा तीव्रता बढ़ गई है जिसके कारण बीमा क्षेत्र में 'प्रोटेक्शन गैप' चर्चा का विषय बनी हुई है। यह गैप जितना अधिक होगा, वित्तीय तंत्र उतना ही अधिक कमजोर होगा। इससे होने वाले आर्थिक नुकसान से बीमा क्षेत्र प्रभावित होता है। इसके अलावा आधुनिक डिजिटल दौर में साइबर जोखिम ने अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित किया है जिससे बीमा उद्योग के समक्ष भी चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए भारतीय बीमा उद्योग ने कई महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। अर्थव्यवस्था की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बीमा क्षेत्र कई प्रगतिशील सुधारों को अपना रहा है। बीमा उद्योग ग्राहकों को उनके अनुकूल नए उत्पादों को पेश करते हुए बीमा-पैठ को बढ़ाने की दिशा में अग्रसर है। भारत में बीमा के प्रति उपेक्षा तथा अज्ञानता अपने-आप में एक समस्या है। पिछले वर्षों से इंटरनेट की सुविधा बढ़ने के कारण अब डिजिटल माध्यम से बीमा तक पहुँच और वितरण की संभावनाएँ भी बढ़ी हैं। इसके माध्यम से बीमा का बाज़ार विकसित होगा जो पुनर्बीमाकर्ताओं के लिए भी अवसर उत्पन्न करेगा।

जीआइसी री भी पुनर्बीमाकर्ता के तौर पर इस तरह की समस्याओं का सामना कर रही है, लेकिन अब लाभप्रदता तथा विकास के साथ-साथ सॉल्वेंसी में भी वृद्धि हो रही है। हमारी रणनीति दुनिया के बाकी हिस्सों में उपस्थिति बढ़ाते हुए विकसित अर्थव्यवस्थाओं के बाज़ार में स्वयं को स्थापित करना है। एक संगठन के तौर पर हम अपनी इस यात्रा में अपने आदर्शों तथा मूल्यों को ध्यान में रखते हुए दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ रहे हैं। ये आदर्श ही हमारे मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

'प्रोजेक्ट परिवर्तन' के माध्यम से हम प्रबंधात्मक बदलावों के दौर से गुजर रहे हैं। ये बदलाव जीआइसी से जुड़े हितधारकों के सुनहरे अवसर के लिए बाँटें फैलाए हैं। प्रबंधन व्यवस्था का डिजिटलीकरण करते हुए मानव पूँजी का सर्वोत्कृष्ट उपयोग किया जा सकेगा। पेपरलेस कार्यप्रणाली को अपनाने की दिशा में यह महत्वपूर्ण कदम है। इसके तहत निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास कारगर साबित होंगे।

जीआइसी री को सदैव उत्कृष्टता की ओर ले जाने का संकल्प हमें चुनौतियों को स्वीकार करने और उनसे निपटने के लिए प्रेरित करता रहता है। आइए, हम सब मिलकर इस संकल्प को पूरा करें।

नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ....

● एन. रामस्वामी

## संपादक की कलम से...

यह वर्ष भारत के लिए बहुत ही अच्छा रहा। भारत ने कई उपलब्धियां हासिल की।

बचपन से ही हम सभी के मन में चांद और सूरज के प्रति आकर्षण बना रहता है. चांद और सूरज के साथ तो बच्चों का अनोखा रिश्ता जोड़ा गया है. कभी माताएं चांद को बच्चों का मामा बता कर उनके नाम से अपने बच्चों को दूध भात या पूआ खिलाती हैं तो कभी कोई हनुमान जैसा बच्चा सूरज को फल समझ कर निगल लेता है. बचपन से ही चांद और सूरज के प्रति आकर्षण का ही फल है कि हमारे भारतीय वैज्ञानिक चांद और सूरज को अपनी मुट्ठी में करने में कामयाब हो रहे हैं. चांद और सूरज की यह जो गोल आकृति है वह हमें शुरू से ही लुभाती रही है यही गोल आकृति जब बिंदी का रूप लेकर किसी महिला के माथे पर सजती है तो उसकी सुंदरता को निखार देती है और वही बिंदी हिंदी को सभी के लिए सहज लुभावनी और आत्मीय बना देती है.



विश्व भर में बोली जानेवाली भाषाओं में हिन्दी भाषा तीसरे स्थान पर है। विश्वभर में प्रतिवर्ष 10 जनवरी को धूमधाम से मनाया जाता है। भारत में तो हिंदी को जानने वाले लोगों की संख्या 57% है। यह एक ऐसी संपर्क भाषा है जो पूरे भारत में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाती है। यह हिन्दी के लोगों के दिल में राज करने को दर्शाता है। दूसरी भाषाएं तो जैसा कि हम जानते ही हैं कि स्थानीय भाषाएं हैं जिन्हें कुछ प्रतिशत लोगों द्वारा ही बोली या समझी जाती है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी काफी हद तक सभी को जोड़े रहने में एक कड़ी का काम करती आ रही है और प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के आयोजन से और अधिक लोग इससे जुड़ते चले जा रहे हैं।

भारत में हमेशा से लोगों के दिलों पर राज करने वाली यह भाषा अपनी प्रभावशीलता का दायरा बढ़ाती जा रही है।

गिरिजा कुमार माथुर जी ने सच ही कहा है

गंगा-कावेरी की धारा  
साथ मिलाती हिंदी है  
पूरब-पश्चिम, कमल-पंखुड़ी  
संतु बनाती हिंदी है।

हर वर्ष की भांति निगम में भी हिन्दी प्रतियोगिता और हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया जिसमें अधिकारियों और कर्मचारियों ने सहर्ष भाग ले कर सफल बनाया जो सरकार और निगम के द्वारा हिन्दी को बढ़ावा देने के प्रयास को सार्थक बनाने की एक कड़ी बनने में निश्चय ही महत्वपूर्ण होगी।

इस वर्ष तो भारत ने एक और उपलब्धि हासिल की है और वह है 17 दिनों तक सुरंग में अटके 41 लोगों का सही सलामत बाहर निकलना और उन 17 दिनों तक उन सभी का मनोबल बना रहा यह किसी चमत्कार से कम नहीं है। जिंदगी और मौत की लड़ाई में जिंदगी की जीत ने मानव की अदम्य ईच्छाशक्ति का परिचय दिया है. जिस बिन्दु पर जाकर बड़ी बड़ी मशीनों ने जवाब दे दिया वहाँ पर अपने हाथ को जगन्नाथ समझनेवाले और पारंपरिक साधनों पर विश्वास करनेवाले रैट माइनों ने अपने कौशल का परिचय देते हुए सुरंग में फंसे सभी लोगों को सकुशल बाहर निकाला। ऐसा महसूस हुआ कि जो लोग दीवाली के दिन अपने घरों में दीए नहीं जला पाए थे उनको उनकी खुशियां लौटा कर मानो उनके घर को दीए की रोशनी से जगमग कर दिया हो।

2024 दस्तक देने के लिए तैयार है। आनेवाला वर्ष सभी के लिए सुख समृद्धि से भरा रहे।

● अपर्णा सिन्हा

## निगम के नए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री एन. रामस्वामी का हार्दिक स्वागत...

श्री रामस्वामी नारायणन 1988 में सीधी भर्ती के द्वारा अधिकारी के रूप में जीआईसी में शामिल हुए और पिछले तीन दशकों से अधिक समय से वह जीआईसी के विभिन्न कार्यकलापों में शामिल रहे हैं। भारत के पुनर्बीमा के क्षेत्र में उन्होंने अग्नि, इंजीनियरिंग, विविध, मोटर, देयता, विमानन, समुद्री और कृषि साथ ही विश्वभर के विविध गैर-जीवन व्यवसाय को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय बीमा बाजार में व्यापार पोर्टफोलियो को संभालते हुए तीव्र रूप से परिवर्तित हो रहे नॉन-टैरिफ पोर्टफोलियो में आनेवाली कई चुनौतियों का सामना किया है जिसमें कई ट्रीटियों के लिए कोट करना और उनका नेतृत्व करना शामिल है। उन चुनौतियों में पोर्टफोलियो की सुरक्षा के साथ-साथ पूंजी राहत प्रदान करने के लिए ग्राहकों

को आउट-ऑफ-द-बॉक्स समाधान प्रदान करना शामिल है। यूके में मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में अपने साढ़े चार साल के कार्यकाल में वे शाखा के संचालन, जीआईसी के नए स्थापित लॉयड्स सिंडिकेट (जीआईसी 1947) के साथ-साथ कॉर्पोरेट मेम्बर ऑफ जीआईसी के संचालन में भी शामिल थे। प्रधान कार्यालय में अपनी वापसी के बाद से वह महत्वाकांक्षी "प्रोजेक्ट परिवर्तन" को लागू करने में शामिल हैं। "प्रोजेक्ट परिवर्तन" मानव संसाधन विभाग की एक पहल है जो आगे चलकर जीआईसी में गेम चेंजर साबित हो सकती है।

● राजभाषा विभाग

## निगम में स्वतंत्रता दिवस एवं अन्य गतिविधियाँ



निगम में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी धूमधाम से स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया। माननीय प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त, 2021 को अपने भाषण में 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मनाए जाने की घोषणा की थी। इसकी अनुपालन में निगम में 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' का आयोजन भी किया गया।

दिए गए निर्देशों के अनुसार 14 अगस्त को 'विभाजन भयावह स्मृति दिवस' के रूप में मनाया गया। इसके माध्यम से विभाजन से पीड़ित लाखों लोगों की पीड़ा को प्रकाश में लाने की परिकल्पना की गई। यह दिवस देश को पिछली सदी में



मानव आबादी के सबसे बड़े विस्थापन की याद दिलाता है, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों की जान भी गई थी।

जीआईसी ने विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस के अवसर पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया है जिनके माध्यम से 14 अगस्त 1947 के दिन मानव इतिहास में विस्थापन की सबसे बड़ी घटना को दिखाया गया।



भारतीय जीवन बीमा निगम के पूर्व अध्यक्ष श्री एम.आर. कुमार प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के लिए उपस्थित हुए। इस दौरान लगाई गई प्रदर्शनी के माध्यम से विभाजन और उसके दुखद परिणामों को महसूस किया। इस तरह की गतिविधियों के माध्यम से इतिहास के प्रति जागरूकता को बढ़ावा मिलता है।

● ऊषा कामथ, वरिष्ठ प्रबंधक

## निगम में सीएसआर गतिविधियाँ

### वंजुलशेत, अहमदनगर महाराष्ट्र में सामुदायिक केंद्र का उद्घाटन



भारतीय बहुउद्देशीय खादी और ग्रामोद्योग सिख संस्था (बीबीकेजीएसएस) के सहयोग से जीआइसी री द्वारा सीएसआर पहल के एक हिस्से के रूप में महिलाओं के लिए निर्मित सामुदायिक केंद्र

का उद्घाटन एक महत्वपूर्ण अवसर था। यह एकता और सशक्तिकरण की भावना को चिह्नित करता है।

क्षेत्र के सभी ग्रामीण, स्थानीय नेता, समुदाय के सदस्य और महिलाएं इस आवश्यक सुविधा के अनावरण का हिस्सा बनने के लिए एकत्र हुए। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती जयश्री बालकृष्ण (महाप्रबंधक, जीआइसी री) थीं। इसके अलावा श्रीमती स्नेहा नायर (सहायक महाप्रबंधक, जीआइसी री), श्री



गजानन उपाध्याय (मुख्य प्रबंधक, जीआइसी री) और श्री प्रकाश जगताप (निदेशक, बीबीकेजीएसएस) ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत समुदाय के नेताओं द्वारा गर्मजोशी से



स्वागत के साथ हुई, जिसमें निगम द्वारा किए गए सहयोगी प्रयासों के लिए आभार व्यक्त किया गया। इसके अलावा स्थानीय सहयोग किसी परियोजना की सफलता के लिए महत्वपूर्ण कड़ी होती है। गणमान्य व्यक्तियों ने महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के वंजुलशेत क्षेत्र में महिलाओं के लिए शिक्षा, कौशल विकास और सहायक वातावरण को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका पर जोर देते हुए उनके महत्व पर प्रकाश डाला।

रिबन काटने का समारोह वंजुलशेत की महिलाओं के लिए एक नए अध्याय का प्रतीक था। यह सामुदायिक केंद्र महिलाओं के सामाजिक संपर्क के साथ-साथ एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र



की भूमिका भी निभाएगा।

समारोह के दौरान मुख्य अतिथि तथा अन्य उपस्थित सहभागियों ने भाषण दिए जिनमें महिला सशक्तिकरण के लिए उनकी आत्मनिर्भरता को महत्वपूर्ण बताया गया। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण बेहद आवश्यक है। कौशल को व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर मजबूत आधार दिया जा सकता है।

समारोह के समापन के बाद, जीआइसी री के अधिकारियों ने केंद्र का दौरा किया, महिलाओं के लिए उपलब्ध संसाधनों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया। इस सामुदायिक केंद्र में आशावाद और सामुदायिक समर्थन की भावना दिखाई दे रही थी, जो वंजुलशेत की महिलाओं के आशाजनक भविष्य को दर्शाती है। भारतीय साधारण बीमा निगम की इस पहल ने महिलाओं के उत्थान और सशक्तिकरण के उद्देश्य में परिवर्तनकारी शक्ति के प्रमाण के रूप में कार्य किया।

● नितेश भीमटे, वरिष्ठ प्रबंधक

## सिंगापुर अंतरराष्ट्रीय पुनर्बीमा सम्मेलन (एसआईआरसी) 2023

हर साल कि तरह, सिंगापुर इंटरनेशनल रीइन्श्योरेन्स कॉन्फ्रेंस (एस.आई.आर.सी.) 30 अक्टूबर 2023 से 2 नवंबर 2023 तक सिंगापुर के सेंड्रस एक्सपो अँड कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया गया था। इस वर्ष एस.आई.आर.सी. का उन्नीसवाँ साल था।

मॉन्टे कार्लो, बादेन-बादेन के बाद आनेवाला एस.आई.आर.सी. दुनिया का सबसे बड़ा इन्श्योरेन्स / रीइन्श्योरेन्स कॉन्फ्रेंस होता है। इस वर्ष 2800 से अधिक प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए थे। पिछले साल यही संख्या 2500 थी। दुनिया भर के पुनर्बीमाकर्ता, बीमाकर्ता और पुनर्बीमा दलाल इस कॉन्फ्रेंस में शामिल होते हैं और मुख्य सम्मेलन के साथ द्विपक्षीय चर्चाएं आयोजित की जाती हैं।



सिंगापुर अंतरराष्ट्रीय पुनर्बीमा सम्मेलन (एसआईआरसी) 1991 में बीमा पेशेवरों को पुनर्बीमा बाजार में विकास का जायजा लेने और अगले वर्ष की संधि नवीनीकरण के लिए तैयारी शुरू करने के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए शुरू किया गया था।

पुनर्बीमा रीसेट (Reinsurance Reset) यह इस कॉन्फ्रेंस का घोषवाक्य था।

जीआईसी री की तरफ से इस कॉन्फ्रेंस में निम्नलिखित कार्यपालक उपस्थित थे -

1. श्री एन. रामस्वामी, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

2. श्री हितेश जोशी, महाप्रबंधक
3. श्री राजेश पवार, उप महाप्रबंधक (मलेशिया शाखा)
4. श्री सचिन्द्र साळवी, उप महाप्रबंधक
5. श्री संजय मोकाशी, उप महाप्रबंधक
6. श्रीमती मनाली पत्के, उप महाप्रबंधक
7. श्रीमती बबिता अमीन, उप महाप्रबंधक
8. श्री मेल्विन कोलासो, सहायक महाप्रबंधक
9. श्री प्रशांत शिलवंत, सहायक महाप्रबंधक
10. श्रीमती प्रज्ञा प्रभू, सहायक महाप्रबंधक
11. श्रीमती प्रेरणा पुत्रन, सहायक महाप्रबंधक
12. श्री राहुल दयाल (मलेशिया शाखा)

30 अक्टूबर 2023 को दोपहर 2 बजे सम्मेलन में भाग लेनेवालों का पंजीकरण शुरू हुआ और द्विपक्षीय मीटिंग्स भी शुरू हुईं। 2800 से अधिक प्रतिनिधियों ने सम्मेलन के लिए पंजीकरण किया था, अतः प्रवेश (एन्ट्री) पास जारी करने के लिये बहुत से काउन्टर बनाए गए थे। 4 बजे स्वागत भाषण हुआ और 4 बजकर 10 मिनट पर मुख्य अतिथि ने सबको संबोधित किया।

31 अक्टूबर 2023 सुबह 9 बजे से द्विपक्षीय मीटिंग्स शुरू हुईं।

2 बजे ए एम बेस्ट की तरफ से वर्तमान बीमा-पुनर्बीमा, वैश्विक और क्षेत्रीय बाजारों बाजारों पर अंतर्दृष्टि प्रदान करने के बारे में जानकारी दी गयी। चर्चा के विषयों में पुनर्बीमा विकास का वैश्विक बाजार अद्यतन और पूर्वोत्तर और दक्षिणपूर्व एशिया पुनर्बीमा बाजारों की समीक्षाएं शामिल थीं। इसके अलावा, नेशनल स्केल रेटिंग्स, जिसे एएम बेस्ट ने हाल ही में मिस्र, भारत, इंडोनेशिया, फिलीपींस और वियतनाम में पेश किया है, पर चर्चा की गयी। नेशनल स्केल रेटिंग उन बीमाकर्ताओं और पुनर्बीमाकर्ताओं की वित्तीय ताकत का एक सापेक्ष माप है जो एक ही देश में रहते हैं।

पैनल की अध्यक्षता एएम बेस्ट के सिंगापुर परिचालन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी रॉब कर्टिस ने की और बाजार की विस्तृत जानकारी देने सम्बन्धी परिचर्चा पैनलिस्ट में निम्नलिखित भी



शामिल थे:

ग्रेग कार्टर, प्रबंध निदेशक, एनालिटिक्स - ईएमईए और एशिया प्रशांत; स्टीफन होल्ज़बर्गर, मुख्य रेटिंग अधिकारी; क्रिस्टी ली, वरिष्ठ निदेशक, एनालिटिक्स - पूर्वोत्तर एशिया; और क्रिस लिम, एसोसिएट डायरेक्टर, एनालिटिक्स - दक्षिण पूर्व एशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड।

1 नवंबर सुबह 10 बजे 'जलवायु चुनौती - परिवर्तन का समर्थन' (Climate Challenge Supporting the Transition) विषय पर चर्चा हुई. दोपहर 2.30 को 'कार्य का भविष्य - दूर से काम करने की दुविधा' (The Future of Work The Remote Working Dilemma) विषय पर चर्चा हुई।

2 नवंबर सुबह 10 बजे 'डिजिटलीकरण - अवास्तविक आशाएँ या प्रभावशाली परिवर्तन' (Digitalisation Unrealised Hopes or Impactful Transformation) विषय पर चर्चा हुई।

11.30 बजे सम्मेलन में उपस्थित सभी प्रतिभागियों प्रति सम्मेलन में भाग लेने के लिए आभार प्रकट किया गया और सम्मेलन की समाप्ति की घोषणा की गई हालांकि द्विपक्षीय मीटिंग्स शाम 6 बजे तक चलीं।

इस सम्मेलन में विश्व की लगभग सभी रीइन्श्योरेन्स कम्पनियों जैसे कि म्युनिक री, स्विस् री, तोवा री, पार्टनर री, बर्कशायर हाथवे, लॉयड्स, अफ्रीकन री, एलियांज री, एऑन री, हनोवर री, मलेशिया री, मैफ री, स्कोर री, सिंगापुर री, सैमसंग री, सऊदी री, हिमालयन री, इत्यादि मौजूद थे. उसी तरह कई इन्श्योरेन्स कम्पनियां जैसे कि न्यू इंडिया एश्योरेन्स, नेशनल इन्श्योरेन्स, ब्रोकर्स - मार्श, गाय कारपेंटर, एऑन, इंटरलिक, जे बी बोड़ा, के एम् दस्तूर, इत्यादि भी शामिल थे। विश्व की सारी इन्श्योरेन्स, रीइन्श्योरेन्स कम्पनियां, ब्रोकर्स आदि यहाँ चर्चा के लिए उपलब्ध थे।

जी आई सी री के अधिकारियों ने भी इन्श्योरेन्स, रीइन्श्योरेन्स कम्पनियों के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा की। खास करके आने वाले वर्ष 2024 में रिन्यूवल कैसे रहेंगे, प्रीमियम कितना बढ़ सकता है, सिक्किम बाढ़ से इन्श्योरर्स, री इन्श्योरर्स और जी



आई सी को कितना लॉस देना पड़ सकता है जैसे विषयों पर चर्चा हुई।

जी आई सी री के अधिकारियों ने कई इन्श्योरेन्स कम्पनियों के साथ बातचीत की और उनको अपनी भविष्य की योजनाएं बताई जैसे कि -

1. हमारी रणनीति लाभप्रदता के साथ विकास (Growth with Profitability) होगी।
2. हम हर तरह का बिजनेस करने को तैयार हैं लेकिन प्रीमियम पर्याप्तता होने पर ही हम व्यवसाय स्वीकार करेंगे।
3. हम अपना जीवन पुनर्बीमा व्यवसाय विकसित करना चाहते हैं।
4. दावों के त्वरित निपटान पर उचित ध्यान दिया जाता है।

इस सम्मेलन में बीमाकर्तों (Underwriters) के साथ साथ दावों (Claims) एवं लेखा (Accounts) विभाग के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

आज की तारीख में, एस.आई.आर.सी एक ऐसी मजबूत संस्था और वफादार अनुयायी का दर्जा प्राप्त किया है, जिसमें दुनिया भर के पुनर्बीमाकर्ता, बीमाकर्ता और पुनर्बीमा दलाल मुख्य रूप से सम्मेलन में भाग लेते हैं और उसी समय द्विपक्षीय चर्चाएं भी आयोजित की जाती है।

सिंगापुर अंतरराष्ट्रीय पुनर्बीमा सम्मेलन सभी प्रतिभागियों को भविष्य की योजना बनाने के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

● सचिन्द्र साळ्वी, उप महाप्रबंधक

## ‘सतर्कता जागरूकता सप्ताह’ 2023



केन्द्रीय सतर्कता आयोग के आदेशानुसार इस बार 2023 में सतर्कता विभाग द्वारा भारतीय साधारण बीमा निगम में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। सतर्कता दिवस सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिन अर्थात् 31 अक्टूबर को प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस बार ‘सतर्कता जागरूकता सप्ताह’ केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा निर्धारित थीम ‘भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें’ पर 30 अक्टूबर 2023 से लेकर 5 नवंबर 2023 तक मनाया गया था। केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार कई सारे प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसका विवरण नीचे दिया गया है :-

**नैतिकता और शासन पर प्रशिक्षण** - यह प्रशिक्षण 10 अक्टूबर, 2023 को सहायक महाप्रबंधक से ऊपर के संवर्ग के लिए बोर्ड रूम में आयोजित किया गया था। यह प्रशिक्षण श्री हिमांशु विश्वोई, इंटरनेशनल कोचिंग फेडरेशन के द्वारा दिया गया था। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कंपनी के कर्मचारियों को अपने काम-काजी जीवन में उचित नैतिकता को अपनाते हुए काम करने के बारे में जागरूक करना था।

इस प्रशिक्षण की सफलता के बाद यही प्रशिक्षण कार्यक्रम मुख्य प्रबंधक और वरिष्ठ प्रबंधक के लिए भी आयोजित किया गया था।



**जांच अधिकारी और प्रस्तुतीकरण अधिकारी पर प्रशिक्षण**- भारतीय बीमा संस्थान, बीकेसी बांद्रा में जांच अधिकारी और प्रस्तुतीकरण अधिकारी पर एक प्रशिक्षण रखा गया था जिसमें उप प्रबंधक से मुख्य प्रबंधक स्तर के कर्मचारियों ने भाग लिया था। इसका मुख्य उद्देश्य कंपनी में किसी तरह के केस आने पर कंपनी के कर्मचारियों की जांच और प्रस्तुतीकरण की गुणवत्ता तथा क्षमता को विकसित करना था।

**निवारक सतर्कता पर प्रशिक्षण** - मिनी बोर्ड रूम में मुख्य प्रबंधक और वरिष्ठ प्रबंधक के लिए निवारक सतर्कता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। अंत में भ्रष्टाचार विरोधी और पीआईडीपीआई से संबंधित एक विडियो दिखाया गया और कुछ प्रश्न भी पूछे गए।



**विक्रेता और कार्यालय रख-रखाव स्टाफ के लिए पीआईडीपीआई पर प्रशिक्षण** - एक प्रशिक्षण 20 अक्टूबर, 2023 को कंपनी के विक्रेताओं और कार्यालय रख-रखाव स्टाफ के लिए पीआईडीपीआई पर प्रशिक्षण रखा गया था।

**साइबर स्वच्छता पर प्रशिक्षण** - एस्टोरिया होटल में 27 अक्टूबर, 2023 को सहायक प्रबंधक से लेकर मुख्य प्रबंधक संवर्ग के अधिकारियों के लिए साइबर स्वच्छता पर प्रशिक्षण रखा गया था। इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षकों को ऑनलाइन फ्रॉड से होनेवाले खतरों से बचने के तरीकों के बारे में अवगत कराया गया था। साथ ही निगम के अधिकारी श्री सौमद्री दास, वरिष्ठ प्रबंधक ने भी ऑनलाइन फ्रॉड से बचाव पर ज्ञानवर्धक बातें साझा की। अंत में सतर्कता विभाग से श्री अजीत बारला, वरिष्ठ प्रबंधक ने भी पीआईडीपीआई के शिकायत करने के तरीकों के बारे में कर्मचारियों को अवगत कराया।

**खरीद प्रशिक्षण** - भारतीय बीमा संस्थान, बीकेसी बांद्रा में 15 कर्मचारियों के लिए खरीद प्रशिक्षण 10 नवंबर, 2023 को रखा गया था। इस प्रशिक्षण को देने के लिए एलआईसी से श्रीमती नीता बारगे और श्री निखिल पाटिल ‘जेम’ (GEM)



पोर्टल से आए थे। श्री निखिल पाटिल, जिन्होंने जेम पोर्टल में कई सालों तक काम किया है, ने जेम पोर्टल से जुड़ी तकनीकी बातों को साझा किया। जो विभाग कंपनी की तरफ से खरीद करते हैं, उनके लिए यह प्रशिक्षण बहुत फायदेमंद साबित हुआ होगा।

साथ ही साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023 के दौरान निवेश और दावा विभाग ने भी अपने कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण का प्रबंध किया था।

इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अलावा 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' 2023 के दौरान निगम में कई प्रतियोगिताओं, जैसे - निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, ऑनलाइन विवज प्रतियोगिता और वाद विवाद आदि का आयोजन किया गया। सफल प्रतिभागियों के नाम नीचे दिये जा रहे हैं :-

### निबंध प्रतियोगिता (हिन्दी)

क्र. संख्या	प्रतिभागियों के नाम	पुरस्कार
1.	इन्दिरा	प्रथम पुरस्कार
2.	अजीत बारला	द्वितीय पुरस्कार
3	अर्पित छिप्पा	तृतीय पुरस्कार

### निबंध प्रतियोगिता - (अंग्रेजी)

क्र. संख्या	प्रतिभागियों के नाम	पुरस्कार
1	शशिधर इरुकला	प्रथम पुरस्कार
2	सौरव कुमार	द्वितीय पुरस्कार
3	नरेंद्र बासा	तृतीय पुरस्कार

### पोस्टर प्रतियोगिता

क्र. संख्या	प्रतिभागियों के नाम	पुरस्कार
1	आलोक पटेल	प्रथम पुरस्कार
2	नरेंद्र बासा	द्वितीय पुरस्कार
3	अजीत बारला	तृतीय पुरस्कार

### ऑनलाइन विवज प्राइतियोगिता

क्र. संख्या	प्रतिभागियों के नाम	पुरस्कार
1	प्रणीत कानूगोजे	प्रथम पुरस्कार
2	हिमांशु शर्मा	प्रथम पुरस्कार
3	प्रभात बिंजोला	प्रथम पुरस्कार
4	नरेंद्र बासा	द्वितीय पुरस्कार
5	चन्द्र भूषण	प्रथम पुरस्कार
6	गिरीश गंगाधरन	प्रथम पुरस्कार

वाद-विवाद प्रतियोगिता का संचालन श्री जेठो झामनानी, सहायक महाप्रबंधक ने किया। इस प्रतियोगिता में इन प्रतिभागियों ने सहभागिता की-

क्र. संख्या	प्रतिभागियों के नाम	पक्ष /विपक्ष
1	आलोक पटेल	सरकारी कर्मचारी
2	शशीधर इरुकला	सरकारी कर्मचारी
3	वेदान्त झकरवार	आम आदमी
4	कृष्ण उपपीलिरि	आम आदमी

'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का समापन 03 नवम्बर 2023 को बोर्ड रूम में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रमोद कुमार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, सीबीआई को आमंत्रित किया गया। उन्होंने भ्रष्टाचार से होने वाले दुष्परिणामों पर चर्चा करते हुए भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने के विषय पर संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में सभी पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किया। इस अवसर पर श्री प्रमोद कुमार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, सीबीआई और श्रीमती जयश्री रानडे, महाप्रबंधक, श्री एस. अलगरसामी, मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा कंपनी के लिए ऑनलाइन कम्प्लेंट पोर्टल का भी उदघाटन किया गया।

निगम के बाहर सतर्कता विभाग द्वारा केन्द्रीय विद्यालय 1 में निबंध प्रतियोगिता और पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके साथ साथ रायगढ़ जिले के पाली ग्राम पंचायत में 31 अक्टूबर 2023 भी ग्रामीणों और स्कूल के विद्यार्थियों के लिए हमने भ्रष्टाचार और पीआईडीपीआई से संबंधित जानकारी प्रदान की और पीआईडीपीआई के विषय पर विवज प्रतियोगिता का आयोजन भी किया था।

अंत में कहना चाहूंगा कि -

आओ निर्माण करें सपनों के भारत का,  
आओ निर्माण करें भ्रष्टाचार मुक्त भारत का।  
चरित्र का, ईमान का, स्वाभिमान का,  
आओ निर्माण करें सपनों के भारत का।

● अजीत बारला, वरिष्ठ प्रबंधक

## प्रोटोकॉल अधिकारी के रूप में अनुभव



अक्टूबर, 2023 में गैर-सौदा रोड शो के रूप में बैठकों और कार्यक्रमों की योजना बनाई गई थी, जिसमें विभिन्न निवेशकों के साथ जीआईसी प्रबंधन की बैठक शामिल थी। सीएमडी सर और महाप्रबंधकों के साथ, निवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग (डीआईपीएएम) के अधिकारियों को इन बैठकों के लिए आमंत्रित किया गया था। मुझे 'दीपम' के संयुक्त सचिव श्री आलोक पांडे के साथ 3 दिनों के लिए प्रोटोकॉल अधिकारी के रूप में कार्य सौंपा गया था। मैं सहायक महाप्रबंधक, सुश्री स्नेहा नायर को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने मुझे यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी प्रदान की।

यह प्रोटोकॉल अधिकारी के रूप में कार्य करने का पहला अवसर था और मैं इसके लिए उत्साहित था। मैं उन्हें रिसीव करने के लिए एयरपोर्ट पर इंतजार कर रहा था। उसी दौरान उन्होंने मुझे मैसेज किया- "मैं उतर गया हूँ, कार तैयार रखो क्योंकि हमें जल्द से जल्द मीटिंग के लिए निकलना है।" उनकी बॉडी लैंग्वेज सरल थी, साथ ही उतनी ही पेशेवर भी। मुझे समझ आ गया था कि वे एक मिनट भी बर्बाद नहीं करना चाहते हैं। हम विभिन्न बैठकों के लिए आयोजन स्थल पर पहुँचे। सभी बैठकों के पश्चात् मैंने उन्हें होटल में छोड़ दिया। इस तरह पहला दिन अच्छी तरह से समाप्त हुआ।

अगला दिन काफी व्यस्त था क्योंकि विभिन्न कार्यालयों में कई बैठकें निर्धारित थीं। एक बैठक 'सुरक्षा' भवन के पास एचडीएफसी कार्यालय में थी। उस बैठक के समाप्त होने के बाद वे सीएमडी सर और महाप्रबंधकों के साथ दोपहर के भोजन के लिए जीआईसी कार्यालय आए। इस प्रकार दिन की सभी मीटिंग खत्म करने के बाद हम बीकेसी के होटल जा रहे थे, लेकिन शाम को वहाँ भयानक ट्रैफिक था। हम लगभग

15-20 मिनट तक उस ट्रैफिक में फंसे रहे, जिसके बाद सर ने कहा कि वह इस तरह खाली नहीं बैठ सकते और चलने के लिए कार से बाहर निकल गए। होटल लगभग 4 किलोमीटर दूर था, लेकिन उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। वह खुश थे कि इस तरह से वे उस दिन की उनकी पैदल यात्रा के लक्ष्य को भी पूरी करेंगे। उनके इस उत्साह में मैं भी शामिल हो गया और उनके साथ पैदल चलने में आनंद आने लगा। हम लगभग एक घंटे तक चलते रहे, लेकिन हमें बिलकुल भी थकान महसूस नहीं हुई। उस दिन की पैदल यात्रा मेरे लिए बहुत यादगार बन गयी। रास्ते में चलते हुए सर आसपास की छोटी-छोटी चीजों को ध्यान से देख रहे थे और अपने अनुभव साझा कर रहे थे। उस दौरान अपने निजी जीवन के बारे में कई बातें साझा की। उन्होंने बताया कि वे योग करते हैं और नियमित रूप से टहलने जाते हैं। इस बात की पुष्टि उस समय की परिस्थिति ज़ाहिर तौर पर कर रही थी। वे सामान्य रूप से आनंद लेते हुए चल रहे थे। कार आने से बहुत पहले ही हम होटल पहुँच गए थे। उस समय मुझे एहसास हुआ कि सही समय पर सही निर्णय लेना कितना महत्वपूर्ण है।

अगले दिन वे सिद्धिविनायक मंदिर जाना चाहते थे। मैं सिद्धिविनायक मंदिर नियमित रूप से जाता रहता हूँ इसलिए इसकी योजना बनाना मेरे लिए आसान था। मंदिर में शांतिपूर्वक दर्शन करने के लिए हमने दिन की शुरुआत जल्दी करने का निर्णय लिया। सौभाग्य से वहाँ भीड़ नहीं थी और हमने मंदिर में दर्शन किए। उसी दिन उनकी शाम की फ्लाइट थी और मुंबई के ट्रैफिक का सामना करने के बाद उन्हें चिंता हो रही थी कि कहीं ट्रैफिक में फंसकर उनकी फ्लाइट छूट न जाए। उस दिन की आखिरी बैठक सांताक्रूज में हुई थी जो हवाई अड्डे के पास ही थी, जिससे उन्हें कुछ राहत मिली। बैठक के पश्चात् मैंने उन्हें हवाई अड्डे पर छोड़ दिया और अलविदा कहा।

मुझे पता ही नहीं चला कि वो तीन दिन कैसे बीत गए। कई लोगों के साथ बातचीत करने, बड़े निवेश घरानों के प्रधान कार्यालयों की यात्रा करने का अवसर मिला। इसके अलावा श्री आलोक पांडे जैसे वरिष्ठ और अनुभवी व्यक्ति के साथ सीखने का अनुभव शानदार रहा। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं जीआईसी का धन्यवाद करता हूँ और भविष्य में भी मुझे इस तरह के अवसर प्रदान किए जाने की उम्मीद करता हूँ।

● आशीष गुप्ता, सहायक प्रबंधक

## इंडियन ऑइल नेवी मॅरेथॉन - 2023



भारतीय नौसेना की पश्चिमी नौसेना कमान द्वारा संचालित 'इंडियन ऑइल नेवी हाफ मॅरेथॉन' दौड़ का लक्ष्य बदलाव लाना है। इसका छठा संस्करण रविवार, 19 नवंबर, 2023 को मुंबई में आयोजित हुआ। इसकी शुरुआत 2016 में हुई थी और हर वर्ष काफी बड़ी संख्या में भागीदारी रहती है। वर्ष 2022 में 15,000 से अधिक धावकों ने भाग लिया था। नौसेना का लक्ष्य इस वर्ष के संस्करण को भागीदारी और उत्साह के नए स्तर तक ले जाना था और एक आनंदमय दौड़ का वादा था - सभी धावकों को एक अच्छे दिन का अनुभव देना। यह दौड़ ऐतिहासिक तथा महत्वपूर्ण मार्ग अर्थात् दक्षिण मुंबई के प्रतिष्ठित परिसर में आयोजित की गई। इस साल मॅरेथॉन में 16,000 से ज्यादा धावकों ने भाग लिया था।

आज़ाद मैदान से शुरू होते वाली यह दौड़ हुतात्मा चौक - चर्चगेट स्टेशन - मरीन लाइन्स तक जाकर वही से वापस नरीमन पॉइंट, उसके बाद मंत्रालय की तरफ से आज़ाद मैदान में खत्म हुई।

इस मॅरेथॉन में तीन प्रकार की दौड़ होती है -

### 21 कि.मी. एयरक्राफ्ट कैरियर रन -

21 कि.मी. की हाफ मॅरेथॉन दौड़ना फायदेमंद होता है। इसे पूरा करना उतना ही आनंददायक और रोमांचक होता है। 21 कि.मी की दौड़ अपनी शारीरिक और मानसिक चुनौतियों के साथ आती है। अनुभवी धावकों के लिये इस चुनौती को स्वीकार करने और अपनी सीमाओं का परीक्षण करने के लिए यह एक अच्छी दौड़ है।

### 10 कि.मी. डिस्ट्रॉयर रन -

10 कि.मी की दौड़ पूरी करना आपकी फिटनेस का प्रमाण है। यह प्रतिबद्ध धावकों को अनुभवी टाइम-किपर्स की संगति में खुद को अगले स्तर तक ले जाने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इस मॅरेथॉन में भाग लेकर बहुत से धावक स्वयं को जनवरी में होनेवाली मुंबई मॅरेथॉन के लिये तैयार करते हैं।

### 5 कि.मी. फ्रिगेट रन -

5 कि.मी. की इस दौड़ में लंबी दौड़ के लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में पहला कदम हो सकता है। कम दूरी की दौड़ होने के कारण इस दौड़ में कई परिवार भाग लेते हैं और एक स्वस्थ जीवन शैली की ओर आगे बढ़ते हैं। चाहे आप अकेले दौड़ें या सह-धावकों के साथ, यह दौड़ निश्चित रूप से आपके लिए एक अविस्मरणीय स्मृति बना देता है। इस वर्ष जी.आई. सी. री के काफी धावकों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया था।

21 कि.मी. दौड़ में कुणाल, प्रतीक, विनोद और सौरभ ने भाग लिया था। 10 कि.मी. दौड़ में सचिन साळवी, प्रेरणा पुत्रन, सुरज, रविराज, निलेश, सत्यजित, संचारी, मेर्विन, शशिकांत पवार, शंतनू ने भाग लिया था। सुश्री प्रेरणा पुत्रण के लिए कहा जाता है कि वह मॅरेथॉन में दौड़ने की 'प्रेरणा' देती हैं। खास अभिनंदन तो श्री रामकृष्णन और श्री रमेश हेगडे जी का, जो हमारे रिटायर्ड साथी हैं और अभी भी शारीरिक रूप से फिट हैं तथा दौड़ में भाग लेते रहते हैं। श्री हेगडे ने तो लगभग 1 घंटे में दौड़ पूरी कर ली थी।

इस साल मॅरेथॉन भागते समय धावकों को कुछ छोटे रास्तों की वजह से परेशानी हो रही थी और वातावरण में ज्यादा नमी थी।

नेवी मॅरेथॉन की एक और विशेषता है, उनके द्वारा दिया जाने वाला किट। टी-शर्ट काफी अच्छे होते हैं और तंदुरुस्ती के भी अनेक उत्पाद वो देते हैं जो काफी अच्छे होते हैं।



इस मॅरेथॉन की वजह से मुंबई के लोगों में तंदुरुस्ती के बारे में जागरूकता आई है। नेवी मॅरेथॉन में भागने के बाद अब हम सब धावक आगे आने वाली मॅरेथॉन दौड़ के लिये तैयार हो रहे हैं, जिसमें मुख्य मॅरेथॉन 'टाटा मुंबई मॅरेथॉन' है, जो 21 जनवरी, 2024 को होने वाली है।

● सचिन्द्र साळवी, सहायक महाप्रबंधक

## बीदर, कर्नाटक में सीसीई



के बीच की अवधि 15-30 दिन है।

खेतों का दौरा करने और सीसीई को देखने पर अवलोकन निम्नानुसार थे:

इस क्षेत्र का अधिकांश भाग वर्षा सिंचित है और उगाई जाने वाली फसलें अपनी सिंचाई आवश्यकताओं के लिए वर्षा पर निर्भर हैं।

खरपतवार को हटाने के बावजूद भी असामयिक वर्षा के कारण खेत खरपतवार से ढके हुए थे।

फसल कटाई प्रयोग (सीसीई) एक गांव में किसी विशेष खेत की उपज का अनुमान लगाने के लिए की जाने वाली गतिविधि है। ऐसे प्रयोगों के विभिन्न नमूनों का औसत उस गांव/तालुका/जिले के लिए उपज प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह राज्य सरकार के अधिकारियों द्वारा चुने गए यादृच्छिक रूप से चयनित क्षेत्र पर किया जाता है। उस खेत में 5 मीटर \* 5 मीटर के क्षेत्र की कटाई करके उपज का एक नमूना लिया जाता है और प्राप्त अनाज को तौलकर रिकॉर्ड दर्ज किया जाता है।



औसत से कम बारिश के कारण कुछ क्षेत्रों में सोयाबीन की पैदावार सामान्य से कुछ कम थी।

कुल मिलाकर, यह एक बहुत अच्छा क्षेत्र अनुभव था क्योंकि हमें फसल की स्थिति, इस प्रायोगिक प्रक्रिया में शामिल संगठनों के कामकाज और सबसे महत्वपूर्ण किसानों की स्थिति के बारे में पता चला।

यूनिवर्सल सॉल्पो जनरल इंश्योरेंस कंपनी के अधिकारियों के साथ ऐसे ही एक फसल कटाई प्रयोग (सीसीई) की सह-निगरानी के लिए जीआइसी री के कृषि अंडरराइटिंग विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक श्री प्रसाद गोरे और उप प्रबंधक श्री हिमांशु रावत 06.10.2023 को कर्नाटक के बीदर जिले के बीदर तालुक के हुचुकनेली गांव गए।

सोयाबीन की फसल के लिए सीसीई का संचालन किया जा रहा था। जैसा कि सेडेंट द्वारा सूचित किया गया है, सोयाबीन इस जिले में प्रमुख फसल है, जो खरीफ मौसम में 70% से अधिक फसली क्षेत्र को कवर करती है। यहाँ सोयाबीन को आम तौर पर तूर/अरहर के साथ 3:1 के अनुपात में एक अंतर-फसल पैटर्न में उगाया जाता है अर्थात्, सोयाबीन की 3 पंक्तियाँ और अरहर की 1 पंक्ति। दोनों फसलों की कटाई



● प्रसाद दत्तात्रय गोरे, वरिष्ठ प्रबंधक

## जीआइसी री में हिंदी पखवाड़ा तथा हिंदी दिवस समारोह

### हिंदी पखवाड़ा

भारतीय साधारण बीमा निगम में प्रति वर्ष हिंदी पखवाड़ा हर्ष तथा उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दौरान कार्यालय में कार्यरत विभिन्न अधिकारियों, कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं।

इस वर्ष भी जीआइसी री में 4 सितंबर से 8 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएँ हस्ताक्षर प्रतियोगिता, प्रश्न मंच, 'तस्वीर बोलती है' प्रतियोगिता, हिंदी कहानी लेखन तथा पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गयी। हस्ताक्षर प्रतियोगिता के पुरस्कार सभी संवर्ग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को श्रेणीवार अलग-अलग प्रदान किए गए। शेष प्रतियोगिताओं के पुरस्कार एक ही श्रेणी में सम्मिलित रूप से दिए गए।

इस वर्ष हस्ताक्षर प्रतियोगिता के अंतर्गत सहायक महाप्रबंधक तथा उससे ऊपर के संवर्ग में कुल 21, सहायक प्रबंधक से मुख्य प्रबंधक के संवर्ग में 146 तथा तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के संवर्ग में 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया। 'तस्वीर बोलती है' प्रतियोगिता में 39, कहानी लेखन प्रतियोगिता में 35 तथा पोस्टर प्रतियोगिता में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए कुल 70 पुरस्कार प्रदान किए गए। इन पुरस्कारों का वितरण हिंदी दिवस समारोह के दौरान किया गया।

6 सितंबर, 2023 को निगम के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए प्रश्नमंच का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में हिंदी भाषा, सामाजिक विज्ञान, संगीत, मनोरंजन, खेल, पुरस्कार, संविधान तथा अन्य समसामयिक प्रश्न पूछे गए तथा सही जवाब देने वालों को तत्काल पुरस्कार प्रदान किए गए। इस प्रतियोगिता के लिए आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता राजभाषा विभाग के उप महाप्रबंधक श्री राजेश खडतरे द्वारा की गयी। इस अवसर पर राजभाषा विभाग की मुख्य प्रबंधक सुश्री अपर्णा सिन्हा मंच पर उपस्थित थीं। उन्होंने इस कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्रोताओं से प्रश्न पूछे। इस प्रतियोगिता में अधिकारियों तथा कर्मचारियों की शानदार उपस्थिति निगम में हिंदी के प्रति उत्साह और रुचि को दिखाती है।

इन सभी प्रतियोगिताओं में निगम में कार्यरत सभी कर्मचारियों ने उत्साह के साथ भाग लेकर पखवाड़े को सफल बनाया।

### हिंदी दिवस समारोह

भारतीय साधारण बीमा निगम द्वारा 25 सितंबर, 2023 को के.सी. कॉलेज के ऑडिटोरियम में अत्यंत हर्षोल्लास के साथ हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। यह समारोह हर

वर्ष हिंदी पखवाड़े के पश्चात् आयोजित किया जाता है।

कार्यक्रम की शुरुआत दीपप्रज्वलन के साथ हुई। इस दौरान जीआइसी परिवार के गायक कलाकारों द्वारा गणेश वंदना, भक्ति गान तथा देशभक्ति गान किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री देवेश श्रीवास्तव द्वारा की गयी। इस दौरान मंच पर महाप्रबंधक एन. रामस्वामी, महाप्रबंधक सुश्री जयश्री रानडे, महाप्रबंधक श्री हितेश जोशी, महाप्रबंधक एस. के. रथ तथा महाप्रबंधक जयश्री बालकृष्ण भी मौजूद थे। मंचासीन अतिथियों को पुष्प-गुच्छ देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत राजभाषा विभाग की महाप्रबंधक महोदया सुश्री जयश्री बालकृष्ण के स्वागत भाषण के साथ हुई। उन्होंने निगम के सभी कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़े में उत्साह से भाग लेने तथा पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। राजभाषा हिंदी तथा उसके महत्त्व के बारे में बताते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के प्रति जिम्मेदारियों की जानकारी दी। उन्होंने पुनर्बीमा व्यवसाय में अब्बल रहने के साथ-साथ हिंदी कार्यान्वयन के प्रति सजग रहने की अपील की।

हिंदी पखवाड़े के सभी विजेताओं को मंच पर बुलाकर सम्मानित किया गया। इस दौरान वर्ष भर हिंदी में अधिकतम कार्य करने वाले कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री देवेश श्रीवास्तव ने अध्यक्षीय भाषण के दौरान जीआइसी री को उत्कृष्ट हिंदी गृह-पत्रिका 'क्षितिज' के प्रकाशन के लिए पुरस्कार मिलने की बधाई देते हुए बताया कि हमारी पत्रिका को पिछले कई वर्षों से यह पुरस्कार मिलना सम्मान की बात है। उन्होंने बताया कि एक पुनर्बीमा कंपनी होने के कारण अंतरराष्ट्रीय प्रकृति की कार्यप्रणाली होते हुए भी निगम में हिंदी के प्रति सकारात्मक माहौल है। उन्होंने अपने दैनंदिन कार्यप्रणाली में हिंदी को जोड़ने का आह्वान किया। उन्होंने सभागार में उपस्थित सभी सदस्यों से अपील की कि हिंदी के प्रति यह रुचि हिंदी माह और पखवाड़े तक सीमित नहीं रहकर वर्ष भर होनी चाहिए।

सहायक महाप्रबंधक सुश्री स्नेहा नायर ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस अधिकारिक कार्यक्रम का मंच संचालन सुश्री अपर्णा सिन्हा द्वारा किया गया। इसके पश्चात् निगम के कार्मिकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

● इन्दिरा, सहायक प्रबंधक

### हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार





हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार



हिंदी दिवस - सांस्कृतिक कार्यक्रम



हिंदी दिवस - सांस्कृतिक कार्यक्रम



## ‘जाँच अधिकारी एवं प्रस्तुतकर्ता अधिकारी’ विषय पर कार्यशाला



एलआईसी डिजिटल, बीकेसी मुंबई में 21 सितंबर से लेकर 22 सितंबर तक ‘जाँच अधिकारी और प्रस्तुतकर्ता अधिकारी’ विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन जीवन बीमा निगम और हिंदुस्तान पेट्रोकेमिकल्स द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इसमें 20-22 सरकारी कंपनियों के कर्मचारियों ने भाग लिया था।

जीआईसी सी से निम्नलिखित अधिकारियों ने भाग लिया :

1. अजीत बारला, वरिष्ठ प्रबंधक
2. देशराज चट्टार, वरिष्ठ प्रबंधक और
3. समीर सपधरे, वरिष्ठ प्रबंधक

पहले दिन विजिलेंस स्टडी सर्कल के अंतर्गत आने वाले मुंबई के सभी सीवीओ कार्यक्रम के उदघाटन के लिए मौजूद थे। एलआईसी सीवीओ श्री सुबोध ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि हर कंपनी के पास कई सारे केस होते हैं जो कंपनी में या सीबीआई में लंबित होते हैं। सीवीसी के पास जब भी इनके बारे में सुझाव मांगा जाता है तो बार-बार यही दिक्कत आती है कि केस में सिलसिलेवार क्रम से अनुशासनात्मक कार्रवाई की सारी प्रक्रिया पूरी हुई है या नहीं। इस कार्यशाला के बारे में सूचना काफी देरी से मिलने के बावजूद बहुत सारी कंपनियों के लोग आए और सभी ने इसका भरपूर लाभ उठाया।

पहले दिन एचपीसीएल के श्री मुखर्जी ने अनुशासनात्मक कार्रवाई के दौरान जाँच अधिकारी और प्रस्तुतकर्ता अधिकारी की अहम भूमिका की विस्तार से चर्चा की। अनुशासनात्मक प्राधिकारी का उद्देश्य कंपनी में अनुशासन सुनिश्चित करना होता है। इसके लिए कभी-कभी उन्हें गलत कर्मचारियों को परामर्श, चेतावनी या कुछ जुर्माना लगाने जैसे कदम उठाने पड़ते हैं। पर इससे पहले उन्हें जाँच अधिकारी और प्रस्तुतकर्ता अधिकारी की राय भी आरोपी अधिकारी के बारे में सुननी पड़ती है। जाँच अधिकारी की ज़िम्मेदारी होती है कि वह अच्छी तरह से जाँच कर अपनी रिपोर्ट पेश करे, लेकिन आरोपी कर्मचारी को भी मौका दिया जाये कि वो भी अनुशासनात्मक प्राधिकारी के समक्ष अपना पक्ष रख सके। यदि आरोपी अपने ऊपर लगे

आरोप स्वीकार कर लेता है तो जाँच नहीं होती है, लेकिन जो आरोप वह स्वीकार नहीं करता है, उस पर ही जाँच शुरू की जाती है।

दूसरे दिन एचपीसीएल के सिंह महोदय ने अनुशासनात्मक कार्रवाई की प्रक्रिया के बारे में बतलाया। हर कंपनी में कुछ न कुछ केस चल रहे होते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यही होती है कि प्रक्रिया सही और पूरी होनी चाहिए क्योंकि कई बार ऐसे मामले अदालत में भी जाते हैं। तब यह देखा जाता है कि प्रक्रिया सही तरीके से पूरी की गयी है या नहीं। इसलिए जाँच अधिकारी, प्रस्तुतकर्ता अधिकारी, गवाह और आरोपी कर्मचारी सभी को इस पूरी प्रक्रिया का सही ज्ञान होना चाहिए ताकि मामला 6 महीने की समय सीमा के अंदर ही खतम हो सके। प्रक्रिया संबंधी ज्ञान के अभाव में भी केस कई दिनों तक चलता रहता है। दोपहर में एक केस स्टडी साझा की गयी जिसमें एक कर्मचारी जो दिल्ली ऑफिस में कार्यरत था, उस पर यह आरोप लगा था कि वह 700 से ज्यादा दिन कार्यालय में अनुपस्थित था। जिसकी वजह से कंपनी को काफी नुकसान भी हुआ था क्योंकि वह एक मैनुफेक्चरिंग यूनिट में काम करता था। आरोपी कर्मचारी के ऊपर कभी यह दबाव नहीं होता है वो अपनी ईमानदारी साबित करे बल्कि यह जाँच अधिकारी की जिम्मेदारी है कि चार्ज शीट पर लगाए गए सारे आरोप सही साबित करे ताकि आरोपी कर्मचारी को इसकी सजा मिल सके।

वैसे तो हर अनुशासनात्मक प्राधिकारी काफी ज्ञानवान और अनुभवी होते हैं फिर भी उन्हें भी इन बातों का ध्यान रखना चाहिए :-

सविधान में मिले मौलिक प्रावधान, सीसीएस रूल 1965, लॉ ऑफ नैचुरल जस्टिस, कंपनी के सर्विस रूल, भारत सरकार के अनुशासनात्मक नियम, केन्द्रीय सतर्कता विभाग के दिशा निर्देश, केस से जुड़ी हर बातें, आदि।

कार्यक्रम के अंत में एलआईसी के सीवीओ सुबोध महोदय और एचपीसीएल के सीवीओ तिवारी महोदय ने सभी प्रतिभागियों से कार्यक्रम का फीडबैक मांगा। सभी प्रतिभागियों ने कार्यक्रम की तारीफ की। फिर उन्होंने सभी से कहा कार्यालय में अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि सभी कर्मचारियों के साथ समान व्यवहार किया जाए और सबको बतलाया जाए कि कंपनी हर कर्मचारी से क्या-क्या उम्मीदें रखती है। सकारात्मक अनुशासन, कर्मचारी विकास और फीडबैक पर ध्यान केन्द्रित करने से काम और प्रॉफिट में वृद्धि हो सकती है। साथ ही जिन कर्मचारियों को प्रशिक्षण की जरूरत होती है उन्हें प्रशिक्षण जरूर देना चाहिए।

● अजीत बारला, वरिष्ठ प्रबंधक

## सतर्कता जागरूकता सप्ताह भ्रष्टाचार का विरोध करें; राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें - प्रथम पुरस्कार



जो लोग उत्तम (स्वर्ग के सुख) की कामना करते हैं, वे तुच्छ आनंद से गुमराह होकर (इस जीवन में) अन्याय नहीं करते।  
- (तिरुक्कुरल/कुराल)

उपरोक्त पंक्तियाँ महान ऋषि तिरुवल्लुवर ने तब लिखी थी जब नैतिक मूल्य भारतीय संस्कृति की पहचान हुआ करते थे। यही वह समय था जब भारतीय संस्कृति में दर्शन, धर्म, नीति से संबंधित विचारधाराओं का सूत्रपात हुआ और उन पर उपनिषदों और गीता के नैतिक ज्ञान का प्रभाव था। आधुनिकीकरण द्वारा हमने खुद को हर तरह की प्रौद्योगिकी से उन्नत तो कर लिया है, लेकिन अपने नैतिक मूल्यों को बहुत पीछे छोड़ कर आ गए हैं। उपभोक्तावाद (Consumerism) और भौतिकवाद (Materialism) की अंधी दौड़ ने मनुष्य को असीम इच्छाओं का पुतला बना दिया है। इन इच्छाओं को पूरा करने के लिए व्यक्ति भ्रष्ट आचरण अपनाता है। वर्तमान में भ्रष्टाचार एक कैसर का रूप ले चुका है जो हमारे समाज में 'सिर से पैर तक' फैल चुका है।

### भ्रष्टाचार : कारण और परिणाम

भ्रष्टाचार एक ऐसा अभिशाप है जो हमारे देश को खोखला कर रहा है। देखा जाए तो गरीब व्यक्ति भी मौका मिलने पर भ्रष्टाचार कर सकता है, लेकिन सामान्य तौर पर उच्च पदों पर बैठे प्राधिकारी और राजनेता भ्रष्टाचार के चंगुल में जल्दी फँसते हैं। उनके भ्रष्ट आचरण के कारण समाज का सबसे कमजोर और असुरक्षित (Vulnerable) तबका सर्वाधिक प्रभावित होता है। भ्रष्टाचारी व्यक्ति स्वार्थवश पैसों के लालच में आकर बेईमानी करता है, लेकिन इसकी पीड़ा बहुत दर्दनाक हो सकती है। भ्रष्ट आचरण



अपने चरम रूप में इंसानों की जान ले सकता है। किसी पुल को बनाने के लिए कोई अधिकारी घटिया और सस्ती सामग्री का प्रयोग करके पैसे तो हड़प लेगा/लेगी, लेकिन उस पुल के रखरखाव की लागत कई गुना ज्यादा होगी और कमजोर होने के कारण कभी भी गिरने का खतरा बना रहेगा। किसी प्रोजेक्ट को पूरा होने के लिए कई स्तरों से गुजरना पड़ता है, उसके अनुमोदन के लिए कई अधिकारियों तक फाइल जाती है। इस प्रक्रिया में हर एक स्तर पर प्रोजेक्ट की कुछ राशि कम होती जाती है। इस प्रकार भ्रष्टाचार एक कुचक्र बनाता है जिसका अंतिम बोझ आम जनता पर ही आता है।

आखिर उच्च स्तर पर बैठे लोग (राजनेता, अधिकारी, डॉक्टर) भ्रष्टाचार के प्रति इतने असंवेदनशील क्यों हो जाते हैं? इसके प्रतिउत्तर में एक ही बात सुनी जाती है 'इस पद को पाने के लिए मैंने खर्च किया है तो वापस क्यों नहीं कमा सकता।' इस तरह की सोच से ही भ्रष्टाचार की शुरुआत होती है जो व्यक्ति को आजीवन ग्लानि रहित भ्रष्टाचार करने को प्रेरित करती रहती है।

### भ्रष्टाचार को ना कहें...

अगर हमें प्रगति और खुशहाली लानी है तो भ्रष्टाचार को समाप्त करना होगा और नैतिक मूल्यों को अपनाना होगा। 'भ्रष्टाचार निरोधक संशोधन अधिनियम, 2018', 'लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम, 2013' जैसे कानूनों को कड़ाई से लागू करना होगा। इसके केंद्रीय सतर्कता आयोग जैसे संस्थानों में जनता के विश्वास को बढ़ाना होगा। भ्रष्टाचार एक महायुद्ध है और इस युद्ध में 'मैं अकेला क्या कर सकता हूँ' के स्थान पर 'हर कदम महत्वपूर्ण है' की सोच को बढ़ावा देना होगा।

### राष्ट्र के प्रति समर्पण...

मजबूत राष्ट्र के निर्माण के लिए भ्रष्टाचार जैसी बुराई को खतम करना बहुत जरूरी है। शिक्षा, स्वास्थ्य द्वारा व्यक्ति निर्माण तथा मजबूत आधारभूत संरचना द्वारा अर्थव्यवस्था का निर्माण करना होगा। इस कार्य में भ्रष्टाचार का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। हमें न्यायपूर्ण समाज की स्थापना करना है जहाँ हर व्यक्ति अपनी क्षमता का प्रयोग कर सकें।

### सारांश :

एक भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका है। जागरूक और सचेत नागरिक ही राष्ट्र की अमूल्य निधि होते हैं। राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि के लिए भ्रष्टाचार जैसे रोग को समूल नष्ट करना है तो हमें अपने नैतिक मूल्यों से जुड़े रहना होगा।

● इन्दिरा, सहायक प्रबंधक

## भ्रष्टाचार का विरोध करें; राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें - द्वितीय पुरस्कार

भ्रष्टाचार एक सामाजिक और आर्थिक बीमारी है, जो देश के प्रगति में रुकावट डालती है। पिछले कुछ दशकों में हुए भ्रष्टाचार से संबंधित घोटालों में जनता के हितों और देश की छवि को बुरी तरह से प्रभावित किया है। इन सब बड़े घोटालों एच डी पनडुब्बी घोटाला, पेट्रोल पंप घोटाला, चुरहर लाटरी घोटाला, बिटमैन घोटाला, झामुमो रिश्त घोटाला, चीनी घोटाला और बोफोर्स घोटाला शामिल है। प्रतिभूति घोटाला 1992 ने शेयर बाजार और वित्तीय संस्थानों से 5000 से 9000 करोड़ रुपये छिन लिए। हालांकि सबसे कुख्यात चारा घोटाला था, जिसमें 950 करोड़ रुपये निकाले गए थे, और बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को आरोपी बनाया गया था। इसके बाद 2 जी स्पेक्ट्रम घोटाला था। भ्रष्टाचार एक व्यापक संक्रामक बीमारी है, जो सरकारी कार्य प्रणालियों, विभागों, संस्थानों व्यक्तियों या समूहों के जीवन को खोखला कर रहा है। यह जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर चुका है, चाहे वह सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, भौतिक या नैतिक हो। भ्रष्टाचार एक अनैतिक लाभ है, जो सरकारी कार्य को जल्दी कराने के लिए मांगा जाता है। ये जल्दी काम पूरा करने के एवज में दी गई रकम होती है। रिश्त लेना और देना कानूनन जुर्म है।

यह वास्तव में शर्म की बात है कि भारत दुनिया के सबसे भ्रष्ट देशों में से एक है। 180 सूची में भारत का स्थान 85 पर है। यानि पूरे विश्व में भारत की छवि भी भ्रष्टाचार को लेकर खराब है। हममें से अधिकांश या तो सभी भ्रष्ट होते जा रहे हैं या भ्रष्टाचार का शिकार हो चुके हैं।

“भ्रष्टाचार की हर तरफ फैली बीमारी, सतर्क और जागरूक रहने की हमारी बारी,,

प्राचीन काल से भ्रष्टाचार की उपस्थिति सामाजिक बुराई के रूप में रही है। अथर्ववेद में भी लोगों को भ्रष्टाचार से दूर रहने की चेतावनी दी गई है। कौटिल्य ने भी अर्थशास्त्र में भ्रष्ट लोगों द्वारा सरकारी धन के दुरुपयोग के लिए अपनाए गए चालीस उपाय का उल्लेख किया हैं। दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजी को भ्रष्टाचार में लिप्त होने से अपने भूमि राजस्व कर्मचारियों के वेतन में काफी वृद्धि करनी पड़ी। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपने पुस्तक “दि डिस्कवरी आफ इंडिया” में ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में व्यापक भ्रष्टाचार के बारे में लिखा है।

“जिसने अन्याय पूर्वक धन इकट्ठा किया है और अकड़ कर सदा सर को उठाए रखा है, ऐसे व्यक्ति से दूर रहो। ऐसे लोग स्वयं पर भी बोझ होते हैं, इन्हे शांति नहीं मिलती।”

**अर्थशास्त्री कौटिल्य**

“यह धरती प्रत्येक की जरूरत को पूरा कर सकती है, लेकिन किसी एक की भी लालच को नहीं।”

**महात्मा गांधी**

भ्रष्टाचार के बारे में हम सब जानते हैं पर ये भ्रष्टाचार कितने तरह के होते हैं, पूरी तरह जानने के बाद ही भ्रष्टाचार को दूर करने में सहायता मिल सकती है। भ्रष्टाचार के रूप नीचे दिए जा रहे हैं :-

### 1. पारंपरिक भ्रष्टाचार -

यह तब होता है जब सरकारी अधिकारी, चाहे उच्च या निम्न पद के हो, अवैध रूप में अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए अनुचित लाभ प्राप्त करते हैं और ये लोगों के हित के लिए नहीं होते हैं।

### 2. अपरंपरागत भ्रष्टाचार -

यह वहां मौजूद है, जहां एक सार्वजनिक अधिकारी, सार्वजनिक हित के लिए विचार किए बिना कार्य करता है। लेकिन दोनों पक्षों के बीच कोई स्पष्ट मुद्रा या अन्य लेन-देन नहीं होता है। इसमें पैसों की हेरा-फेरी, चोरी और कंपनी के नियमों के साथ समझौता शामिल है।

### 3. राजनीतिक भ्रष्टाचार -

इसमें उच्च अधिकारियों के शामिल होने से इसे बड़ा भ्रष्टाचार माना जाता है। इसमें ऐसे राजनेता शामिल होते हैं जो कुछ कंपनियों और उद्योगों को फायदा पहुंचाने का काम करते हैं। कंपनियां अपने लाभ के लिए सरकारी नीतियों और कानून को प्रभावित करते हैं।

### 4. प्रणाली गत भ्रष्टाचार -

यह वहां मौजूद है जहां सरकारी और निजी व्यवसाय में सुनियोजित तरीके से भ्रष्टाचार चल रहा होता है।

### 5. सार्वजनिक और निजी भ्रष्टाचार -

सरकारी अधिकारी सार्वजनिक धन का दुरुपयोग कर रहे हैं, जबकि निजी क्षेत्रों के अधिकारी गलत तरीके से अपना व्यवसाय कर रहे हैं।

भ्रष्टाचार बढ़ने के भी कई कारण होते हैं। भ्रष्टाचार के प्रति लोगों की स्वीकृति और भ्रष्टाचार का विरोध करने के लिए एक मजबूत सार्वजनिक मंच की कमी है। इसके कारण भ्रष्टाचार को फलने-फूलने का मौका मिलता है। विसल ब्लोअर और पीडपी जैसे मंच का इस्तेमाल भी सरकारी कर्मचारियों के द्वारा नहीं करने से भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। जनता या

कर्मचारी का फर्ज है कि कुछ भी गलत काम का पता चलने पर विसल ब्लोअर और पीडपी के द्वारा लोग सीवीसी यानि केन्द्रीय सतर्कता आयोग के सचिव से लिखित में गोपनीय शिकायत कर सकते हैं।

राजनेता भी वोट खरीदने के लिए नकद भुगतान का इस्तेमाल करते हैं। राजनीति में बढ़ता भ्रष्टाचार राजनीतिक वर्ग के उच्च लोगों के फायदे के लिए है, जिसमें जनहित को नजर अंदाज कर दिया जाता है। अशिक्षा और खराब आर्थिक बुनियादी ढांचे के साथ मिलकर जनसंख्या का विशाल आकार सार्वजनिक जीवन में स्थानिक भ्रष्टाचार को भी जन्म देता है।

“देश की जनता कर रही है पुकार,  
बंद करो ये भ्रष्टाचार” ।

भ्रष्टाचार का उन्मूलन

भ्रष्टाचार तभी समाप्त हो सकता है, जब लोग अपने जीवन में नैतिकता और नैतिकता के मूल्यों को समझे और उन पर विश्वास करना शुरू करें। भ्रष्टाचार को समाप्त करने के कुछ उपाय को मैं नीचे आपके साथ साझा कर रहा हूँ -

### 1. तकनीकी में नैतिकता -

आज के समय में हम सभी कार्यालयों में कंप्यूटर या लैपटाप के साथ काम करते हैं। हम किसी भी व्यवसाय के भुगतान के लिए आर.टी.जी.एस का इस्तेमाल करें, नकद या चेक का नहीं। इससे भी भ्रष्टाचार काफी हद तक कम हो सकता है।

### 2. कर्मचारियों का उचित वेतन -

महंगाई समय के साथ काफी बढ़ती चली जा रही है। घर खरीदने की कीमत, कार या पढ़ाई-लिखाई का खर्च मुंबई, दिल्ली, बंगलोर, हैदराबाद जैसे शहरों में बहुत ज्यादा है। इसलिए कर्मचारियों को उचित वेतन देना चाहिए ताकि उनकी सारी जरूरतें पूरी हो सके। और वे भ्रष्टाचार से दूर रहें।

### 3. कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि -

हर कंपनी में पुराने कर्मचारी रिटायर्ड हो रहे हैं, कुछ कंपनी छोड़ के भी जा रहे हैं। इन कर्मचारियों की जगह भरने के लिए कार्मिक विभाग को नई भर्ती करने की आवश्यकता है, जिससे लोगों पर काम का दबाव कम हो।

### 4. भ्रष्टाचार में शामिल कर्मचारी को कड़ी सजा -

जो भी कर्मचारी भ्रष्टाचार से संबंधित काम करते हुए पकड़ा जाता है, तो उसे कंपनी के द्वारा कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए। जिससे भ्रष्टाचार के लिए सबके मन में डर पैदा

हो और लोग गलत काम न करें।

### 5. सीसीटीवी का कार्यालयों में इस्तेमाल -

हर कार्यालय में सीसीटीवी का इस्तेमाल होना चाहिए, ताकि हर कर्मचारी और ग्राहक इसकी निगरानी में रहें। किसी भी तरह का गलत लेन-देन रिकार्ड इसके द्वारा रखा जा सकता है।

### 6. काम का जल्दी निपटाना -

सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार इसलिए बढ़ता है कि हर काम में विलंब से होता है। घर का लोन हो या पेंशन का जल्द भुगतान सरकारी कार्यालयों में जल्दी नहीं होता है, इसलिए ग्राहक भी रिश्त देकर जल्दी काम कराने की कोशिश करते हैं, जिसका सरकारी कर्मचारी भरपूर फायदा लेने की कोशिश करते हैं।

### 7. राजनेताओं की भूमिका -

हर सरकारी काम में राजनेताओं की भूमिका कम से कम होनी चाहिए। विकसित नीति का कार्यान्वयन जनहित के हर क्षेत्र में एक स्वतंत्र आयोग या प्राधिकरण के हाथों में छोड़ दिया जाना चाहिए।

### 8. मुद्रास्फीति को कम करना -

सरकार की भी कोशिश रहनी चाहिए कि मुद्रास्फीति की दर कम हो जिससे देश का विकास अच्छी तरह से हो सके और जनता को वस्तु उचित कीमत पर मिल सके।

### 9. जनता को जागरूक करना -

जनता को भ्रष्टाचार के खिलाफ हमेशा जागरूक करना चाहिए। कर्मचारियों के साथ-साथ घर में रह रही आम जनता और विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे को भी ताकि भविष्य में सब ईमानदारी से काम करें और भ्रष्टाचार से दूर रहें।

### 10. राज्य एवं केंद्र सरकार के शिकायत पोर्टल का प्रयोग -

आम जनता को भ्रष्टाचार के खिलाफ राज्य एवं केंद्र सरकार के शिकायत पोर्टल का प्रयोग करना चाहिए, ताकि सरकार इसकी उचित जांच करा सके।

अंत में यही कहना चाहूंगा

“भ्रष्टाचार न करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें” ।

● अजीत बारला, वरिष्ठ प्रबंधक

## हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिताएँ - पुरस्कृत कहानियाँ

### पैसा और परिवार (प्रथम पुरस्कार)



ग्रामीण भारत के हरे-भरे गाँव चंद्रपुर में एक पटेल परिवार रहता था। गाँव भर में वह परिवार अपनी सादगी, एक-दूसरे के प्रति प्रेम और जीवन में छोटी-छोटी खुशियों का आनंद लेते हुए जिंदगी की उलझनों में भी हास्य ढूँढने के लिए जाना जाता था।

परिवार का मुखिया दिनेश पटेल के एक मेहनती किसान था, जो चिलचिलाती धूप में कड़ी मेहनत करके अपने परिवार की देखभाल करता था। पत्नी मीना पटेल एक दयालु महिला थीं, जो प्यार और शालीनता से अपने परिवार का प्रबंधन करती थी। उनके तीन बच्चे थे आलोक, सुनिता और रवि। आलोक की शिक्षक बनने की आकांक्षा थी, सुनीता एक प्रतिभाशाली कलाकार थी और अपनी कलाकृति द्वारा परिवार का नाम रोशन करना चाहती थी, और सबसे छोटा रवि, जिसका स्वभाव बहुत चंचल था।

एक दिन पटेल परिवार के घर एक पत्र आया जो ग्राम परिषद की ओर से था। उस पत्र में यह सूचना दी गई थी कि पटेल परिवार को अपनी भूमि बेचने के बदले में एक बड़ी राशि दी जाएगी। सरकार उस जमीन का उपयोग एक सड़क बनाने में करना चाहती थी। बड़ी रकम के बारे में सुनकर पूरा परिवार इकट्ठा हुआ और उनके चेहरों पर चमक आ गई। यह खबर गाँव भर में फैल गई। खबर सुनकर उनके पड़ोसी बंसी चाचा भी उनके घर आए। बंसी चाचा गाँव के पंच थे और उन्हें जीवन का अनुभव और ज्ञान था। परिवार को सावधान करते हुए उन्होंने कहा “पैसा छलनी में पानी की तरह उंगलियों से जल्दी निकल जाता है, ये आपको हंसा भी सकता है तो रुला भी सकता है।” पटेल परिवार ने सहमति देते हुए सिर हिलाया, परन्तु इतनी बड़ी राशि के आकर्षण से खुद को रोक न सके। उन्होंने अपनी जमीन बेच दी और सरकार ने उन्हें एक बड़ी रकम दी।

पूरा परिवार अब अपने-अपने खर्चों के बारे में योजना करने बैठा। आलोक ने टिप्पणी की “गायों को पढ़ाने की जरूरत नहीं। अब मनुष्यों को पढ़ाने का समय आ गया है।”

सुनिता ने कहा “अब मैं सर्वश्रेष्ठ कलाकृति बनाऊंगी और शहर में रहूंगी।” छोटे बेटे रवि ने कहा - “मैंने सुना है टीवी पर हंसी बेची जाती है, हम उसे खरीद लेते हैं।”

महीनों बीत गए और परिवार में सभी ने अपनी जरूरतें पूरी की। उनका पैसा इतना जल्दी खत्म हो रहा था जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। आलोक शहर के फैंसी स्कूल में शिक्षक तो बन गया था, परन्तु वह खुश नहीं था। सुनिता भी शहर जाकर अपनी कला का प्रदर्शन करने लगी, परन्तु ज्यादा दिन तक वहाँ रह नहीं पाई। छोटा बेटा रवि टीवी देखने में इतना मग्न हो गया कि पढ़ाई-लिखाई से मन ही उठ गया।

पटेल परिवार को समझ में आ गया कि बंशी चाचा ने सही कहा था। उनके परिवार का सुख उनकी सरलता और साझा हंसीखुशी में ही है। पटेल परिवार के दोनों बच्चे आलोक और सुनीता वापस गाँव लौट आए। गाँव आकर वे अपने रोजमर्रा के अनुभवों से प्रफुल्लित कहानियाँ बताने लगे, जिससे गाँव के लोगों की हँसी छूट जाती थी। बंशी चाचा ने भी कहा “हास्य ही हृदय की समृद्ध है और इसमें तुम सब करोड़पति हो।”

दिनेश और मीना ने अपने बच्चों से कहा “जब हमारा परिवार ही इतना प्यारा और सुंदर हैं तो हमें खुशी के लिए किसी भी फैंसी सामग्री की जरूरत नहीं है।”



उस दिन पटेल परिवार को एक मूल्यवान सबक मिला कि जीवन की असली समृद्धि धन-दौलत से नहीं बल्कि परिवार के साथ प्यार, साझा हंसी और अपनेपन से मापी जाती है। उन्होंने आगे का जीवन खुशी और शालीनता से व्यतीत करने का निर्णय लिया।

● अमित दत्ता, उप प्रबंधक



## कर भला सो हो भला (द्वितीय पुरस्कार)



चन्द्रपुर नामक गाँव में दो भाई रहते थे - सोहन और मोहन। सोहन बड़ा था और मोहन छोटा। गुजर-बसर करने हेतु दो-दो एकड़ की जमीन थी। एक दिन दोनों भाईयों में बहस शुरू हो गई कि भलाई करने पर अच्छा होता है या नहीं। सोहन ने कहा कि तू

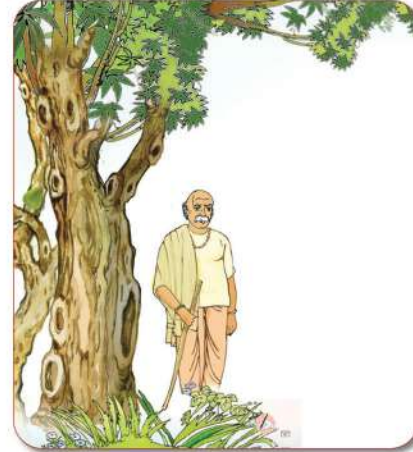
चाहें तो गाँव वालों से पूछ ले, आजकल भलाई का ज़माना नहीं रहा। इस पर मोहन बोला “नहीं भैया, मैं तो जानता हूँ कि कर भला सो हो भला।”

दोनों ने शर्त लगाई कि वे गाँव वालों से पूछेंगे। जो शर्त हारेगा, वह अपने हिस्से की जमीन दूसरे को दे देगा। दोनों भाईयों ने गाँव को काफी लोगों से पूछा और तकररीबन सभी लोगों का यही मानना था कि अब भलाई का ज़माना नहीं रहा है। आज कल भलो करने वालों से लोग सिर्फ अपना उल्लू सीधा करते हैं। इस तरह शर्त के मुताबिक मोहन यह शर्त हार गया। उसे अपने हिस्से की ज़मीन अपने बड़े भाई को देनी पड़ी।

समय बीतता गया और आमदनी का कोई स्रोत न होने के कारण मोहन का परिवार भूखों मरने लगा। इस पर मोहन ने बड़े भाई सोहन से सहायता माँगने की सोची। आखिर वह बड़ा भाई मना नहीं करेगा। उसने सोहन के घर जाकर कहा “भैया 10 किलो चावल की सहायता कर दो। घर में बच्चे भुखे मर रहे हैं।” इस पर सोहन ने कहा पैसे दो और सहायता लो। मोहन के पास देने के लिए फूटी कोड़ी भी नहीं थी। पैसों से तंगी दिखाई तो बड़े भाई ने कहा कि देने के लिए पैसे नहीं है तो अपनी एक आँख दो और चावल लो। अपने भाई के मुँह से यह बात सुनकर मोहन चकित रह गया, लेकिन वह मज़बूर था। इसलिए उसने अपनी एक आँख दे दी। जब वह घर लौटकर आया तो उसकी हालत देखकर उसके बीवी-बच्चे रोने लगी। मोहन ने उन्हें चुप कराते हुए कहा कि फिलहाल खाने का इंतजाम तो हो गया है। कुछ दिन ऐसे ही चलता रहा तो फिर खाने की किल्लत पैदा हो गयी। इस बार भी मोहन फिर से सोहन की मदद के लिए उसके घर पहुँचा। सोहन ने मदद के बदले उसकी दूसरी आँख भी ले ली। से। मोहन चावल लेकर घर पहुँचा। मोहन की ये हालत देखकर उसके बीवी-बच्चे सदमे में आ गए तो मोहन ने कहा “रोना बंद कर पगली! तुम मुझे रोज़ सड़क किनारे छोड़ आना, मैं अंधा हो गया हूँ तो अब भीख माँग लिया करूँगा।”

जैसे-तैसे उनके जीवन की गाड़ी चलती रहीं। मोहन की बीवी उसे रोज सुबह सड़क किनारे छोड़ आती और शाम को वापस घर ले आती। 1 दिन भीख माँगते हुए लगभग रात हो गई, परंतु मोहन की बीवी नहीं आई। इस पर मोहन ने सोचा कि उसे घर पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए। मोहन घर की ओर जाने लगा लेकिन रास्ता भटक गया। तब उसने सोचा कि एक पेड़ के नीचे विश्राम कर लेता हूँ। जिस पेड़ के नीचे वह रुका, वह 4 भूतों का बसेरा था। वे चारों भूत महीने के अंत में अपने कार्यों का लेखा-जोखा करने वहाँ आते थे।

भूतों के सरदार ने सभी भूतों से उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में पुछना शुरू किया।



पहला भूत - मैंने दो भाइयों को आपस में लड़वा कर एक भाई को अंधा बना दिया।

सरदार - बहुत अच्छे! उसे क्या पता कि इस पेड़ के पत्तों पर लगी ओस से उसकी आँखे ठीक हो सकती है।

दूसरा भूत - मैंने एक

गाँव में बिल्कुल सूखा ला दिया...

सरदार शाबाश! उन्हें क्या पता कि उस गाँव के पहाड़ के नीचे सारा पानी दबा हुआ है!

तीसरा भूत - मैंने राजा की बेटी को गूँगा बना दिया और उसकी शादी रुक गई।

सरदार शाबास! राजा को क्या पता कि इस पेड़ की छाल को पीसकर पिलाने से उसकी बेटी ठीक हो सकती है।

इसके बाद चारों भूत एक महीने बाद दोबारा मिलने का बोलकर वहाँ से चले गए।

यह सब सुनकर मोहन ने सबसे पहले पेड़ की ओस को अपनी आँखों पर लगाया। उसकी आँखें वापस ठीक हो गईं। वह तुरंत घर भागा। घरवाले उसे भला-चंगा देखकर बहुत खुश हुए। फिर वह सपरिवार सूखे गाँव गया। वहाँ उसने गाँव वालों को पहाड़ के नीचे पानी होने की बात बदल दी। गाँव वालों ने खुदाई की और पानी मिलने पर बहुत खुश हुए। उस गाँव के राजा ने मोहन को बहुत सारा धन देकर विदा किया। यह सब लेकर मोहन और उसका परिवार उस राजा के पास

गया जिसकी बेटी गूंगी हो चुकी थी। राजग के पास पहुँचकर मोहन ने कहा “राजन् मैं आपकी पुत्री को ठीक कर सकता हूँ।” राजा से आज्ञा मिलने पर मोहन ने उस पेड़ की छाल को पीसकर राजकुमारी को पीला दिया। राजकुमारी तुरंत बोलने लगी। राजा बहुत प्रसन्न हुआ और मोहन को एक महल बनाकर दिया। इसके बाद मोहन और उसका परिवार सुख से रहने लगे। मोहन को एकाएक देख कर देकर सोहन को बड़ी ईर्ष्या हुई। उसने मोहन से माफी मांगी और उसका राज पूछा। मोहन ने उसे सब बता दिया। सोहन लालच वस उसी पेड़

के नीचे जाकर बैठ गया। रात्रि में भूत वहाँ आए और चर्च करने लगी कि उनकी सारे किए-कराए पर पानी फेर दिया। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि कोई तो उनका भेद जान गया है। तभी उन्होंने नीचे किसी को बैठा पाया। उन्होंने समझा कि यही हमारा भेदी है। यह सोचकर उन सबने सोहन को घेर लिया। सोहन जैसे तैसे वहाँ से जान बचाकर भागा। अंत में वही हुआ कर भला सो हो भला, कर बुरा सो हो बुरा।

● आलोक पटेल, वरिष्ठ प्रबंधक

## 'तस्वीर बोलती है' - पुरस्कृत रचना

### भारत का गौरव - चंद्रयान 3 (प्रथम पुरस्कार)



23 जुलाई, 2023, यह तिथि अब इतिहास में अंकित हो चुकी है, क्योंकि इस दिन भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर स्पेसक्राफ्ट लैंड करने वाला विश्व का पहला देश तथा चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला विश्व का चौथा देश बन गया है। इसके उपरांत विश्व ने अब स्पेस तकनीकी के क्षेत्र में भारत का लोहा मान लिया है।

बताया जाता है कि भारत का पहला रॉकेट साइकिल पर प्रक्षेपास्त्र केंद्र तक ले जाया गया था। साइकिल से चंदा मामा तक का यह सफर अविस्मरणीय है। इस स्वप्न को सफल बनाने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के वैज्ञानिकों की दिन-रात की कड़ी मेहनत शामिल है। हमें यह सफलता यूँ ही नहीं मिल गई। इसके लिए हमारे वैज्ञानिकों को चंद्रयान

- 2 की विफलता भी देखनी पड़ी। इस विफलता से सीख लेकर आखिर चंद्रयान - 3 को सफल बनाया गया।

चंद्रयान - 3 को आंध्र प्रदेश के श्री सतीश धवन स्पेस सेंटर से 15 जुलाई, 2003 को लॉच किया गया। इसके लिए लॉच वाहन एलवीएम3 एम4 (LVM3 M4) का इस्तेमाल किया गया। इस रॉकेट में विकास इंजन का इस्तेमाल हुआ। अमेरिका का अपोलो -II मिशन केवल 8 दिन में चंद्रमा पर पहुंच गया था। पर क्या कारण है कि चंद्रयान - 3 को चंद्रमा पर पहुंचने के लिए 1 महीने से भी ज्यादा समय लगा। हमारे वैज्ञानिकों ने इस मिशन की लागत को कम करने लिए बहुत ही समझदारी दिखाई। उन्होंने धरती और चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का उपयोग किया। उन्होंने रॉकेट को तब लांच किया जब चंद्रमा की दूरी (यानी जब चंद्रमा धरती से निकटतम) सबसे कम थी। इसके बाद प्रणोदक माड्यूल को धरती की कक्षा में स्थापित कर धरती के चक्कर लगवाते रहे। इस चक्कर की कक्षा अंडे के आकार की थी। इस प्रकार माड्यूल धरती के निकट आता था, तो उसे धरती की गुरुत्वाकर्षण शक्ति अपनी ओर खींचती थी। वैज्ञानिक फिर नियंत्रण केंद्र से माड्यूल को धरती से टकराने से बचाते हुए उसे धरती के दूसरी ओर भेज देते थे। इस प्रकार माड्यूल गुलेल की तरह धरती से और दूर चला जाता था। धीरे-धीरे इस तरह धरती की कक्षा से दूर होकर चंद्रमा की कक्षा में स्थापित हुआ।

प्रणोदक माड्यूल के तीन हिस्से थे। प्रणोदक माड्यूल स्वयं, विक्रम लैंडर व प्रज्ञान रोवर। जब प्रणोदक माड्यूल चंद्रमा की सतह से 100 किलोमीटर की दूरी पर था, तब उसने उद्धर्वाधर अवतरण के लिए विक्रम लैंडर को छोड़ा। इसके बाद 23 अगस्त, 2023 को भारतीय समयानुसार सायं 6:00 बजे, लैंडर ने धीरे-धीरे अपने चार इंजन की सहायता से चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के समीप सॉफ्ट लैंडिंग की। विक्रम लैंडर के

अंदर प्रज्ञान रोवर विद्यमान था जो रात्रि 10:42 बजे बाहर आया और अपने 6 पहियों की सहायता से इसरो व राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न की छाप हमेशा के लिए अंकित कर गया। लैंडर में चंद्रमा सरफेस थर्मोफिजिकल एक्सीपेरिमेंट इंस्ट्रूमेंट फ़ॉर लूनर सिसमिक एक्टिविटी जैसे यंत्र लगाए गए। लैंडर व रोवर, एक चंद्रमा दिवस यानी पृथ्वी के 14 दिन तक काम किया।

इस खोज में चंद्रयान - 3 मिशन ने यह पता लगाया कि चंद्रमा की सतह का तापमान 70 सेल्सियस है और सतह से 8 सेंटीमीटर नीचे का तापमान 10 सेल्सियस है। विक्रम लैंडर ने अपने आपको चंद्रमा की सतह से 40 सेंटीमीटर ऊपर पुनः लांच किया और कुछ दूरी पर जाकर दोबारा लैंड किया। इस प्रयोग से भविष्य में दूसरे ग्रहों पर जाकर वापस आने वाले

तथा चंद्रमा पर इंसान को भेजने वाले मिशन पर कार्य किया जा सकता है। इस मिशन ने अब तक चंद्रमा पर सल्फर की पुष्टि की है और बताया है कि भविष्य में चंद्रमा को रहने योग्य बनाया जा सकता है।

निश्चय ही केवल 615 करोड़ की लागत से इस मिशन को सफल बनाकर भारत ने अपनी छाप छोड़ दी है और भविष्य में अपने लिए दूसरे देशों के मिशन को सफल बनाने हेतु व्यापार के दरवाजे खोल दिए हैं।

अब चंदा मामा दूर के नहीं, अब चंदा मामा हर घर के हो चुके हैं।

● आलोक पटेल, वरिष्ठ प्रबंधक

## वायु प्रदूषण और आपका स्वास्थ्य



वायु प्रदूषण एक परिचित पर्यावरणीय स्वास्थ्य खतरा है। हम जानते हैं कि जब किसी शहर पर भूरी धुंध छा जाती है तो हम क्या देख रहे होते हैं, कुछ वायु प्रदूषण दिखाई नहीं देता है, लेकिन इसकी तीखी गंध आपको सचेत कर देती है।

### वायु प्रदूषण क्या है?

वायु प्रदूषण मानव निर्मित और प्राकृतिक दोनों स्रोतों से खतरनाक पदार्थों का मिश्रण है। कुछ खतरनाक पदार्थ प्राकृतिक रूप से हवा में छोड़े जाते हैं, जैसे ज्वालामुखी विस्फोट से निकलने वाली राख और गैसों। अन्य उत्सर्जन मानव और प्राकृतिक दोनों गतिविधियों के कारण हो सकते हैं,

जैसे जंगल की आग से निकलने वाला धुआं, जो अक्सर लोगों द्वारा शुरू किया जाता है; और मीथेन, जो मिट्टी के साथ-साथ जानवरों के चारे में कार्बनिक पदार्थों के विघटित होने से आता है। मानव निर्मित वायु प्रदूषण के प्राथमिक स्रोत वाहन निकास हैं; घरों को गर्म करने के लिए ईंधन तेल और प्राकृतिक गैस; विनिर्माण और बिजली उत्पादन के उप-उत्पाद, विशेष रूप से कोयला-ईंधन वाले बिजली संयंत्र; और रासायनिक उत्पादन से निकलने वाला धुआं।

कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx), और सल्फर ऑक्साइड सहित हानिकारक गैसों मोटर वाहन उत्सर्जन के घटक और औद्योगिक प्रक्रियाओं के उपोत्पाद हैं।

सल्फेट्स, नाइट्रेट्स, कार्बन या खनिज धूल जैसे रसायनों से बने पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) जीवाश्म ईंधन और कार्बनिक पदार्थों के दहन के दौरान बनते हैं।

जीवाश्म ईंधन के दहन के दौरान वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (वीओसी) निकलते हैं, और पेंट, सफाई सामग्री, कीटनाशकों और यहां तक कि गोंद जैसी शिल्प सामग्री से भी निकलते हैं।

पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन (पीएएच) दहन, बिजली उत्पादन और कुछ विनिर्माण के दौरान निकलने वाले कार्बनिक यौगिक हैं। पीएएच पार्टिकुलेट मैटर में भी पाए जाते हैं।

ओजोन, एक वायुमंडलीय गैस, तब बनती है जब कारों, बिजली संयंत्रों, रिफाइनरियों और अन्य स्रोतों द्वारा उत्सर्जित प्रदूषक

सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में रासायनिक प्रतिक्रिया करते हैं। इसे हम स्मॉग कहते हैं।

वायु प्रदूषण स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करता है सूक्ष्म कण पदार्थ (पीएम 2.5) मानव बाल की तुलना में 30 गुना पतला होता है और फेफड़ों के ऊतकों में गहराई तक जा सकता है। यह वायु प्रदूषण के कारण होने वाले अधिकांश स्वास्थ्य प्रभावों के लिए जिम्मेदार है। अन्य महत्वपूर्ण योगदानकर्ता और परिणाम अनुसरण करते हैं।

श्वसन रोग वायु प्रदूषण फेफड़ों के विकास को प्रभावित कर सकता है और वातस्फीति, अस्थमा और क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) से जुड़ा है। पीएम और नाइट्रोजन ऑक्साइड को क्रोनिक ब्रोंकाइटिस से जोड़ा गया है।

हृदय रोग वायु प्रदूषण आपके हृदय और हृदय प्रणाली को कई तरह से प्रभावित कर सकता है। पीएम 2.5 रक्त वाहिका की कार्यप्रणाली को खराब कर सकता है और धमनियों में कैल्सीफिकेशन को तेज़ कर सकता है।

### कैंसर

वायु प्रदूषण से कई प्रकार के कैंसर जुड़े हुए हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि बेंजीन, एक औद्योगिक रसायन और गैसोलीन का घटक, के व्यावसायिक संपर्क से ल्यूकेमिया हो सकता है, वायु प्रदूषण के संपर्क से स्तन कैंसर विकसित होने का खतरा विशेष चिंता का विषय है।



वायु प्रदूषण न केवल मानव स्वास्थ्य को बल्कि उस पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचा रहा है जिसमें हम रहते हैं। सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभाव इस प्रकार हैं।

**अम्ल वर्षा** (बारिश, कोहरा, बर्फ) या सूखी (कण और गैस)

वर्षा होती है जिसमें नाइट्रिक और सल्फ्यूरिक एसिड की जहरीली मात्रा होती है। वे पानी और मिट्टी के वातावरण को अम्लीकृत करने, पेड़ों और वृक्षारोपण को नुकसान पहुंचाने और यहां तक कि इमारतों और बाहरी मूर्तियों, निर्माणों और मूर्तियों को भी नुकसान पहुंचाने में सक्षम हैं।



**धुंध** तब उत्पन्न होती है जब सूक्ष्म कण हवा में फैल जाते हैं और वातावरण की पारदर्शिता को कम कर देते हैं। यह औद्योगिक सुविधाओं, बिजली संयंत्रों, ऑटोमोबाइल और ट्रकों से आने वाली हवा में गैस उत्सर्जन के कारण होता है।

**वैश्विक जलवायु परिवर्तन।** पृथ्वी के वायुमंडल में प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली गैसों का एक नाजुक संतुलन होता है जो सूर्य की कुछ गर्मी को पृथ्वी की सतह के पास रोक लेता है। यह "ग्रीनहाउस प्रभाव" पृथ्वी के तापमान को स्थिर रखता है। दुर्भाग्य से, इस बात के प्रमाण बढ़ते जा रहे हैं कि मनुष्यों ने कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन सहित इनमें से कुछ ग्रीनहाउस गैसों का बड़ी मात्रा में उत्पादन करके इस प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ दिया है। परिणामस्वरूप, ऐसा प्रतीत होता है कि पृथ्वी का वायुमंडल सूर्य की अधिक गर्मी को सोख रहा है, जिससे पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ रहा है - एक ऐसी घटना जिसे ग्लोबल वार्मिंग के रूप में जाना जाता है। कई वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्लोबल वार्मिंग का मानव स्वास्थ्य, कृषि, जल संसाधनों, जंगलों, वन्य जीवन और तटीय क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है।

● डॉ. अनुराग पी राऊळ, उप प्रबंधक

## कार्यस्थल पर दैनिक मुद्दे और उनके वैज्ञानिक उपाय



किसी भी कार्यस्थल पर कर्मचारियों को दैनिक मुद्दों का सामना करना पड़ता है, जो उनकी प्रगति और कार्य प्रदर्शन पर असर डालते हैं। इन मुद्दों का समाधान करने के लिए वैज्ञानिक तत्वों पर आधारित कुछ उपाय अपनाए जा सकते हैं। यह लेख कार्यस्थल पर दैनिक मुद्दों को समझने और उन्हें वैज्ञानिक तत्वों के माध्यम से समाधान करने पर ध्यान केंद्रित करेगा।

कार्यस्थल में स्थिरता की कमी एक आम समस्या है जो कर्मचारियों को प्रभावित करती है। कर्मचारियों की चिंतित, तनावग्रस्त और निराश जीवनशैली इसके मुख्य कारण होते हैं और इनके कारण उनकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है। इस समस्या का समाधान करने के लिए संगठनात्मक मनोविज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य के वैज्ञानिक तत्वों का अध्ययन किया जाना चाहिए।

कार्य को अधिक मनोरंजक तरीके से करना एक उपाय हो सकता है जिससे कर्मचारी अपने कार्यस्थल में स्थिरता बढ़ा सकते हैं। कई कार्यस्थलों पर कम समय में कुछ मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे कि कर्मचारी मेले, क्रीड़ा और खेल, और साथीदारी गतिविधियां। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारी स्थिरता और मनोरंजन का आनंद लेते हैं जो उनके कार्य प्रदर्शन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न तत्वों का अध्ययन भी कार्यस्थल में स्थिरता को सुनिश्चित करने में मदद कर सकता है। एक संगठित मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत कर्मचारी को ध्यान देने के लिए विभिन्न तकनीकों और सौंदर्य उपचारों को प्रदान किया जा सकता है। ध्यान के अभ्यास, मेडिटेशन, प्राकृतिक वातावरण और मनोविज्ञानी सलाह सभी तत्व शांति और स्थिरता को बढ़ा सकते हैं।

दूसरी समस्या है सही संचार की कमी। कार्यस्थल में अच्छे संचार के बिना, कर्मचारियों के बीच गलतियों, विसंगतियों और अन्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

उचित संचार के लिए वैज्ञानिक तत्वों का उपयोग किया जा

सकता है। संचार कौशल का प्रशिक्षण, जैसे कि सुनने का कौशल, सवाल पूछने का कौशल, और सही तरीके से वार्तालाप करने का कौशल कर्मचारियों को संचार को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है। संचार के लिए टीम बिल्डिंग कार्यक्रम भी आयोजित किए जा सकते हैं, जिससे कर्मचारी एक-दूसरे के साथ बेहतर संवाद करने का अभ्यास कर सकें। तकनीकी उपकरणों का उपयोग भी संचार में सुधार कर सकता है। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और इंस्टेंट मैसेजिंग ऐप्स द्वारा दैनिक संचार को सुगम बनाने के साथ-साथ स्थानीय और साथीदारी के बीच संचार में वैज्ञानिक तत्वों का उपयोग करें।

तीसरी समस्या है कार्य-परिवेश की अव्यवस्था। कार्य-परिवेश की अव्यवस्था न केवल देखने में अस्वास्थ्यकर होती है, बल्कि यह कर्मचारियों की स्थिरता, स्वास्थ्य और कार्य प्रदर्शन पर भी नकारात्मक प्रभाव डालती है। इस समस्या का समाधान करने के लिए वैज्ञानिक तत्वों का उपयोग किया जा सकता है। कार्य-परिवेश के अनुकूल और स्वास्थ्यपूर्ण बनाने के लिए कार्यस्थल लेआउट, रंग स्कीम, और ज्योतिषीय सुविधाओं का ध्यान देना चाहिए।

आखिर में, सुरक्षा मामलों का समाधान भी कार्यस्थल में स्थिरता को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण है। कर्मचारी सुरक्षा के मामले पर वैज्ञानिक तत्वों का उपयोग करके कार्यस्थल में सुरक्षा प्रक्रियाओं को सुधारा जा सकता है। सुरक्षा प्रशिक्षण, उपकरणों को अपडेट करना और सुरक्षा के लिए प्रभावी नीतियों और प्रक्रियाओं को स्थापित करने के माध्यम से कर्मचारियों की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सकता है।

कुल मिलाकर, कार्यस्थल में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक तत्वों का उपयोग करना आवश्यक है। स्थिरता न केवल कर्मचारियों की कार्यप्रणाली को सुधारती है, बल्कि संगठन को भी लाभ प्रदान करती है। विभिन्न कार्य-परिसरों, मानसिक स्वास्थ्य के तत्वों, संचार की क्षमता, कार्य-परिवेश की व्यवस्था और सुरक्षा के मामलों में वैज्ञानिक तत्वों का उपयोग करना संगठन को एक स्थिर, उत्कृष्ट और सफल स्थान बनाने में मदद कर सकता है।

कार्यस्थलों में स्थिरता का ध्यान रखना आवश्यक है ताकि कर्मचारी अपने प्रदर्शन को सुधार सकें, संगठन की गतिशीलता को बढ़ा सकें, और एक स्वस्थ और निर्धारित कार्य परिवेश में सफलता का आनंद ले सकें। वैज्ञानिक तत्वों का सशक्तिकरण करके हम सब मिलकर एक स्थिर, सुरक्षित, और संतुलित कार्यस्थल का निर्माण कर सकते हैं जो हमारे लिए एक आदर्श रहेगा।

● कुमार गौरव, उप प्रबंधक

## मेरा श्रीलंका दौरा



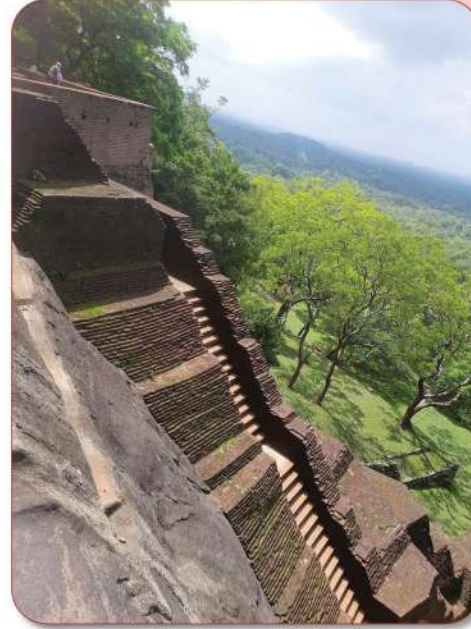
मैं भारत के साथ-साथ अन्य देशों के ऐतिहासिक स्थानों को देखने के लिए भी बहुत उत्सुक रहती हूँ और ऐसे कई स्थान मैंने कई जगहें देखी थीं। हमारे हिंदू महाकाव्य रामायण से प्रेरित होकर मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं अपने जीवन में एक बार रावण के राजसी महल, राम-रावण युद्ध की भूमि को देखूँ। इसलिए इस बार मैंने श्रीलंका जाने का फैसला किया। श्रीलंका,

जिसे ऐतिहासिक रूप से सीलोन के नाम से जाना जाता है, हिंद महासागर में बसा एक द्वीप राष्ट्र है। यह अपने समृद्ध, प्राचीन, मंत्रमुग्ध कर देने वाले बौद्ध मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है।

हम एयर इंडिया की फ्लाइट से चेन्नई होते हुए कोलंबो गए। जब यह भंडारनायके अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे, कटुनायके में उतरने वाला था, तो हमने विमान की खिड़की से शहर की हरियाली के साथ साथ समुद्र किनारा का बहुत सुंदर दृश्य देखा। कोलंबो श्रीलंका की वित्तीय और वाणिज्यिक राजधानी है। हवाई अड्डे पर उतरने के बाद, मैंने महसूस किया कि श्रीलंकाई लोग बेहद मिलनसार, विनम्र और मेहमाननवाज़ हैं। यहाँ मौसम कुछ-कुछ दक्षिणी भारत जैसा है, दिन के समय थोड़ी गर्मी और दिन-रात कभी भी बारिश होती रहती है।

अगले दिन हम सिगिरिया के लिए निकले, जो 5वीं शताब्दी का घर था। सिगिरिया श्रीलंका में देखने लायक सबसे आश्चर्यजनक जगहों में से एक है। किले के प्रवेश द्वार पर खड़े विशाल शेर के कारण इसे 'द लायन रॉक' के नाम से भी जाना जाता है। मुख्य प्रवेश द्वार को शेर के पंजे की तरह डिजाइन किया गया है। इसके चारों ओर घने सुंदर बाग, किले, जलाशय, ध्यान स्थल, अन्य भवन और प्राचीन चित्रकारी भी थे। इससे पता चलता है कि हमारे प्राचीन लोग कितने समृद्ध और उन्नत थे। यह श्रीलंका के सात विश्व धरोहर स्थलों में से एक है। मान्यता यह भी है कि प्राचीन रामायण काल में सोने की लंका में रावण ने कभी राज किया था। हमारे दूर गाइड ने हमें बताया कि इसमें रावण और उसके आगंतुकों के लिए एक विशेष लिफ्ट है क्योंकि शीर्ष पर पहुँचने के लिए

1800 सीढ़ियाँ हैं। शेर के पंजे तक सीढ़ियाँ असमान और खड़ी हैं, इसलिए शीर्ष पर पहुँचने तक हमने कई बार विश्राम किया। वहाँ बहुत सारे बंदर थे, लेकिन वे आगंतुकों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहे थे। मैं सचमुच सिगिरिया से इतनी मंत्रमुग्ध हो गयी, मानो मेरी श्रीलंका यात्रा की इच्छा पूरी हो गई हो। बेहद अच्छा अनुभव।



फिर हमने गौतम बुद्ध के सबसे प्राचीन, लोकप्रिय, विशाल और अच्छी तरह से संरक्षित दांबुला रॉयल गुफा मंदिर का दौरा किया, जो सफेद दीवारों के साथ एक काले चट्टानी पहाड़ पर बना है। यहाँ मैंने कई विदेशी पर्यटकों को देखा जो गौतम बुद्ध में बहुत आस्था रखते थे। वहाँ कुल पाँच

गुफाएँ थीं जिनमें भगवान बुद्ध के जीवन की विभिन्न घटनाओं को दर्शाने वाली मूर्तियाँ और उल्लेखनीय पेंटिंग थीं। सभी कमरों में बुद्ध अलग-अलग स्थिति में शांतिपूर्ण दिख रहे हैं। यहाँ बहुत शांति का वातावरण था।

शाम को हम हबराना में जंगल सफारी के लिए गए, जो अनुराधापुरा जिले का एक छोटा सा शहर है और हाथियों से घनी आबादी वाला है। भारी हरियाली और वन्य-जीवन के कारण यह स्थान पर्यटकों के लिए आकर्षक बन गया है। जीप में हबराना हाथी सफारी एक अच्छा अनुभव है, हमने बहुत सारे हाथियों और उनके परिवारों को देखा और हमें खूबसूरत मोरों की एक झलक पाने का भी मौका मिला।

कैंडी हिल स्टेशन में रहने के बाद अगले दिन, हम कैंडी झील और फिर, सेक्रेड टूथ रेलिक, बौद्ध मंदिर यानि श्री दलाडा मालीगावा देखने गए जो श्रीलंका की सबसे पवित्र स्थलों में से एक है। यह कैंडी के पूर्व साम्राज्य के शाही महल परिसर में स्थित है। जैसा कि नाम से पता चलता है, मंदिर में भगवान बुद्ध के दांत का अवशेष है, जो इसे दुनिया भर के



बौद्धों के लिए श्रद्धा का विषय और तीर्थस्थल बनाता है। हमें ऐसा बताया गया कि इस मंदिर में गौतम बुद्ध के 4 दांतों में से एक रखा हुआ है। हमने शिक्षकों के साथ छात्रों के कई समूहों को इस स्थान पर आते देखा। वे कमल के फूल चढ़ा रहे थे। हमारे टूर गाइड ने बताया कि यदि आप बुद्ध प्रतिमा की ओर पीठ करके अपनी तस्वीर लेते हैं तो श्रीलंकाई लोग इससे नाराज़ हो जाते हैं। यहां इसे बेहद अपमानजनक माना जाता है। इसीलिए यदि आप श्रीलंका जाते हैं तो यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण यात्रा टिप है।

दोपहर में हम पिन्नावेला हाथी अनाथालय गए, जो पिन्नावेला गांव में स्थित जंगली एशियाई हाथियों का संरक्षण स्थान है। हमें पता चला कि वहां कुल 86 अनाथ हाथी हैं। अनाथालय की स्थापना जंगल में अपनी मां के बिना पाए जाने वाले कई अनाथ शिशु हाथियों की देखभाल और सुरक्षा के लिए की गई थी। बड़े-बड़े पत्थरों और पेड़ों के बीच हाथी आज़ादी से घूम रहे थे। यह विदेशी आगंतुकों को आकर्षित करता है, जिससे होने वाली आय से अनाथालय को बनाए रखने में मदद मिलती है। पर्यटक उन्हें बहुत सारे फल खिलाते हैं। दोपहर 12 बजे के आसपास, वे सभी हाथियों को जंबो स्नान के लिए महायेउ नदी पर ले जाते हैं। उन्हें पानी का आनंद लेते, नहाते और खेलते हुए देखना अद्भुत है। इस नदी के पास कई होटल स्थित थे, ताकि पर्यटक जलपान करते हुए इस मनोरंजन को देख सकें।

श्रीलंका बेहतरीन मसालों के लिए भी मशहूर है। तो रास्ते में हम मटाले में स्पाइस गार्डन गए और कई मसालों के पेड़ देखे जिनसे वे कुछ आयुर्वेदिक हर्बल दवाएं और तेल भी बनाते हैं। वहाँ कुछ हर्बल पौधे भी थे। श्रीलंका ऐतिहासिक रूप से दालचीनी के लिए प्रसिद्ध है इसलिए इसका उपयोग कई व्यंजनों में व्यापक रूप से किया जाता है। मैंने भी अपने

उपयोग के लिए कुछ दालचीनी खरीदी। श्रीलंका दुनिया की कुछ बेहतरीन चाय के उत्पादन के लिए भी जाना जाता है। श्रीलंकाई व्यंजन जड़ी-बूटियों, मसालों, मछली, सब्जियों, चावल और फलों के विशेष संयोजन के लिए जाना जाता है। हमने स्थानीय श्रीलंकाई भोजन की जिसमें हमेशा चावल के आटे से बना सेवई (स्ट्रिंग हॉपर), सिंघली में इदियाप्पा, कटहल की सब्जी, कच्चे आम और चुकंदर की सब्जी शामिल होती थी।

श्रीलंका की मुख्य भाषा सिंहली है, इसके अलावा लोग तमिल बोलते हैं। मजे की बात है कि यहां महिलाओं की साड़ी पहनने की शैली भारत की तुलना में थोड़ी अलग है खास कर के वे साड़ी के पल्लू को तब तक लंबा रखती हैं जब तक वह फर्श को छू न जाए। एक द्वीप होने के नाते और चूंकि श्रीलंका एक उष्णकटिबंधीय देश है, आप अधिकांश हिस्सों में वर्ष के किसी भी समय बारिश की उम्मीद कर सकते हैं। यहां दर्शनीय स्थलों की यात्रा के दौरान श्रीलंकाई नागरिकों को कोई प्रवेश शुल्क नहीं, लेकिन विदेशी, भारतीयों को स्थानीय मुद्रा में रुपए खर्च करना पड़ता था। श्रीलंका के रत्न उद्योग का बहुत लंबा और रंगीन इतिहास है। इसीलिए श्रीलंका को प्यार से रत्न-द्वीप कहा जाता है पूरे श्रीलंका में रत्नों की अनेक दुकानें थीं। मैंने भी हमारे तारा चिन्हों के कुछ रत्न खरीदे।

हमने 2-3 समुद्र तट भी देखे जो सूर्यास्त के साथ बहुत साफ और सुंदर थे। तटीय रेलवे लाइन भी श्रीलंका की सबसे आकर्षक और प्रमुख रेलवे लाइनों में से एक है। एक ओर समुद्र और बगल में रेल दौड़ती हुई दिखाई देती है। इसे देखना वाकई अद्भुत है। ट्रेन से यात्रा करना अपने आप में एक यादगार यात्रा है, चाहे वह मध्य श्रीलंका की यात्रा हो या तटीय रेखा पर यात्रा करना अद्भुत है। हम श्रीलंका ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन देखने गए, जिसका नाम पूर्व में रेडियो सीलोन था, जो एशिया का सबसे पुराना रेडियो स्टेशन है और इसकी स्थापना 1925 में कोलंबो रेडियो के रूप में हुई थी। मुझे वास्तव में पुराने दिन याद आ गए जब हम गाने, क्रिकेट कमेंट्री सुना करते थे रेडियो सीलोन से। हमने गंगारामया मंदिर, लाल मस्जिद और पुराने डच चर्च आदि भी देखे। यहाँ नुवारा एलिया जैसी और भी कई खूबसूरत जगहें थीं, लेकिन समय की कमी के कारण मैं नहीं जा पायी। उम्मीद करती हूँ कि भविष्य में मैं बाकी खूबसूरत जगहों को देखने के लिए एक बार फिर श्रीलंका जाना चाहूंगी।

● सुजाता एम। कांचन, वरिष्ठ प्रबंधक

## जीआइसी री का स्थापना दिवस

जीआइसी री ने 22.11.2023 को 51 वर्ष पूरे किए। इस शुभ अवसर पर, जीआइसी री ने 22.11.2023 को "सुरक्षा", प्रधान कार्यालय, चर्चगेट, मुंबई में 51वाँ स्थापना दिवस मनाया।

यह एक महत्वपूर्ण अवसर था जिसने हमें अपनी यात्रा को प्रतिबिंबित करने, हमारी उपलब्धियों का सम्मान करने और आगे आने वाले आशाजनक भविष्य को तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

पिछले पांच दशकों में, जीआइसी री में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। इसकी उत्पत्ति विचार के रूप में हुई जो अब एक संपन्न इकाई के रूप में विकसित हो चुकी है। जीआइसी री अपने हर एक सदस्य के समर्पण और कड़ी मेहनत का प्रमाण है - हमारे संस्थापक, पूर्व और वर्तमान कर्मचारी, भागीदार और हितधारक सभी का इसमें योगदान है।

यह स्थापना दिवस केवल उत्सव तक सीमित नहीं था, यह हमारी विरासत के साथ आने वाली जिम्मेदारियों को पहचानने के प्रति जागरूक करने वाला था। यह हमारे मूल मूल्यों और सिद्धांतों के प्रति सचेत रहते हुए नए बदलावों को गले लगाने और उनके प्रति अनुकूल होने के बारे में भी था।

जीआइसी री की सफलता केवल वित्तीय लाभ या बाजार नेतृत्व से नहीं मापी जाती है। यह हमारे द्वारा बनाए गए प्रभाव से मापा जाता है जिन जिंदगियों को हमने स्पर्श किया, जिन समुदायों को हमने ऊपर उठाया, और जो सकारात्मक बदलाव हम दुनिया में लाए।

इस शुभ अवसर पर हमारे सीएमडी और महाप्रबंधकों ने भाग

लिया। समारोह की शुरुआत भगवान गणेश की पूजा करके हमारी कृतज्ञता व्यक्त करने और प्रार्थना गीत गाने के साथ हुई। समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर किया गया।

मानव संसाधन के महाप्रबंधक द्वारा दर्शकों का स्वागत किया गया और उन्होंने अपनी अंतर्दृष्टि साझा की और एकता और उत्साह की भावना के साथ इस कार्यक्रम को प्रेरित किया।

इस अवसर पर जीआइसी री ने 2023 में निगम की 25 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले हमारे कर्मचारियों को धन्यवाद और सम्मानित किया क्योंकि एक कंपनी अपने कर्मचारियों के बिना अधूरी है। एक कंपनी की सफलता उसके कर्मचारियों की कड़ी मेहनत और समर्पण का परिणाम है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एन. रामस्वामी और महाप्रबंधकों ने जीआइसी परिवार में अपने 25 साल पूरे करने वाले कर्मचारियों को 10 ग्राम सोने के सिक्के और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

सीएमडी महोदय ने इस शुभ अवसर पर दर्शकों को संबोधित किया और जीआइसी की उल्लेखनीय यात्रा में अपने अनुभवों को साझा किया।

श्रीमती सुचिता शेट्टे, मुख्य प्रबंधक, मानव संसाधन ने मानव संसाधन की ओर से सभी जीआइसीएस को धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम का समापन जीआइसी गान और स्वादिष्ट भोजन के साथ किया गया। इस अवसर पर जीआइसी परिवार के लिए 'सुरक्षा' में दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई थी।

● विशाखा शिवलकर, वरिष्ठ प्रबंधक  
(फोटोज कवर पेज 3 पर)

## कार्मिक समाचार

### आगमन :



श्री अक्षय रामस्वामी, सुश्री गायत्री एम., श्री वैभव सांगवेकर, श्री अंकित वर्मा, श्री निखिल कुमार, श्री अमन जैन, श्री जरपुला अजय कुमार, श्री दीपकुमार अशोककुमार चौहान, श्री अमन बसेर, सुश्री अमृता संजय अग्रवाल, श्री प्रतीक विजय वैद्य, श्रीमती सुष्टि सिद्धेश भाईडकर,

श्री सोनू, सुश्री आकांक्षा अरोडा, श्री मौसम कुमार सिंह, श्री सविनय नाथ, श्री अनिल एलुरी का सहायक प्रबंधक के रूप में आगमन हुआ।

### पदोन्नतियां :

श्री एन. रामस्वामी ने दिनांक 1 अक्टूबर 2023 से जीआइसी री के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के रूप में प्रभार लिया।

### विदेशी तैनाती :

श्री राहुल गोयल की जीआइसी री साउथ अफ्रीका, श्री वीरेंद्र

शर्मा की जीआइसी री लंदन शाखा, सुश्री केल्ली लिडिया जे. एवं श्री श्रीविनय जी.बी. की जीआइसी री सिंडिकेट, लंदन., सुश्री नम्रता राहा की एशियन री, श्री राहुल दयाल की मलेशिया शाखा तथा श्री सुमन चंद्र दंडा की जीआइसी पेरस्त्राखोवानी मॉस्को, रशिया में तैनाती हुई।

### स्थानांतरण :

श्री सुंदर सिंह का गिफ्ट सिटी अहमदाबाद कार्यालय में स्थानांतरण हुआ।

### सेवानिवृत्ति/ ऐच्छिक सेवानिवृत्ति :

श्रीमती जयश्री डहाळे, श्री महेश नायक, श्री देवेश श्रीवास्तव, श्रीमती रेमा उदय पुवथ, श्री सिद्धार्थ कांबले, सुश्री आरती सदानंद देशपांडे, श्रीमती कश्मीरा ए. सत्तार सैयद, श्रीमती ग्लेडिस सतीश नाइक, श्रीमती मोधा पुजारी सेवानिवृत्त हुए तथा श्री शशिकांत शियोदासपंत बोंद्रे, श्रीमती अन्नपूर्णा नायर तथा श्रीमती सारिका एस. निमकर ने ऐच्छिक सेवानिवृत्ति ली।

'क्षितिज' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं.

● मानव संसाधन विभाग



## निगम में प्रशिक्षण कार्यक्रम

1 जुलाई 2023 से दिसंबर, 2023 की अवधि के दौरान प्रशिक्षण विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण निम्नवत है :

### आंतरिक प्रशिक्षण

#### 1. प्रबंधन के व्यय का बजट बनाने पर प्रशिक्षण

जीआईसी में बजटिंग विभाग ने निगम के सहायक महाप्रबंधकों के लिए प्रबंधन के व्यय के बजट पर एक प्रशिक्षण का आयोजन किया था। प्रशिक्षण में उल्लेख किया गया कि बजट प्रक्रिया संगठन को पिछले बजट की समीक्षा करके, आने वाली अवधि के लिए राजस्व की पहचान और पूर्वानुमान करके, और कंपनी की विभिन्न लागतों और उस निगम की ताकत पर खर्च करने के लिए राशि आवंटित करके, एक निर्धारित अवधि के लिए अपनी आय और व्यय की योजना बनाने और तैयार करने की सुविधा देती है। बजट बनाते समय कमजोरियों, अवसरों और खतरों पर विचार किया जाना चाहिए। बजट संगठन की दृष्टि और विकास की संभावना प्रस्तुत करता है। बजटीय आंकड़ों में कोई भी अशुद्धि बोर्ड, रेटिंग एजेंसियों और अन्य हितधारकों के विश्वास को कम करती है। यह किसी संगठन को खर्चों की योजना बनाने, व्यावसायिक लक्ष्यों तक पहुंचने और संगठन का समर्थन करने के लिए आवश्यकतानुसार किसी भी परिचालन परिवर्तन की आशा करने की अनुमति देता है और संगठन के प्रति निवेशकों की रुचि पैदा करता है।

#### 2. सतर्कता जागरूकता सप्ताह गतिविधियाँ:-

सतर्कता विभाग के परामर्श से सतर्कता जागरूकता सप्ताह हेतु विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गयीं:-

1. सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान भारत और विदेशों में कार्यालयों सहित जीआईसी सी के कर्मचारियों के बीच अंग्रेजी और हिंदी में 'भ्रष्टाचार को ना कहें, राष्ट्र के लिए प्रतिबद्ध रहें' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

इसके अलावा इस विषय पर एक पोस्टर प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा क्विज प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। उपरोक्त गतिविधियों में निगम के कर्मचारियों ने बेहद उत्साह से सहभागिता की तथा इसके लिए सभी की अच्छी प्रतिक्रिया मिली।

#### 3. नैतिकता और शासन पर प्रशिक्षण:-

मुख्य सतर्कता आयोग के निर्देशों के तहत संगठन के अधिकारियों के लिए नैतिकता और शासन पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया था।



#### 4. संधि नवीनीकरण:-

संधि नवीनीकरण पर पुनर्बीमा टीम के लिए एक इन-हाउस प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था। इस प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागी विभिन्न विभागों जैसे मोटर, समुद्री और विमानन से थे।

इस प्रशिक्षण में इस बात पर ध्यान दिया गया कि प्रस्ताव का कुशल तरीकों से विश्लेषण कैसे किया जाए, जैसे अंडरराइटिंग विचार/सांख्यिकी की समीक्षा/आरएआरसी आदि।

#### ऑनलाइन प्रशिक्षण

1) पुनर्बीमा में ऑनलाइन डिप्लोमा - राष्ट्रीय बीमा अकादमी के पास पुनर्बीमा में एक ऑनलाइन डिप्लोमा था। यह ग्यारह सप्ताह तक चला और इसे प्रत्येक शनिवार को आयोजित किया गया, जिसमें 15 अधिकारियों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम के अंत में निर्धारित परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों को डिप्लोमा प्रमाणपत्र दिया गया।

#### 2) डिप्लोमा आईएफआरएस प्रशिक्षण (प्री-रिकॉर्डेड सत्र):-

आईएफआरएस में डिप्लोमा आईएफआरएस में एक अंतरराष्ट्रीय योग्यता है, जिसे एक प्रमुख पेशेवर लेखा संगठन, एसोसिएशन ऑफ चार्टर्ड सर्टिफाइड अकाउंटेंट्स (एसीसीए) द्वारा विकसित किया गया है। पाठ्यक्रम को आईएफएस पर कामकाजी ज्ञान विकसित करने, आईएफएस की अवधारणाओं और सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग की गहन समझ प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त प्रदान करते हुए आईएफएस के पेशेवर ज्ञान को अगले स्तर तक बढ़ाता है।

#### घरेलू प्रशिक्षण-

1. सुशासन के लिए खरीद, निविदा और सामान्य वित्तीय नियम

## (जीएफआर), 2017- एनपीसी, जयपुर-

राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद (एनपीसी) भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग के तहत एक स्वायत्त संगठन है, जिसने उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को सार्वजनिक वित्तीय से संबंधित मामलों से निपटने में अपनी भूमिकाओं में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करना था।

- i) सार्वजनिक वित्त से जुड़ी जिम्मेदारी और जवाबदेही के लिए।
- ii) सार्वजनिक वित्त के मामलों में विभिन्न क्या करें और क्या न करें के बारे में।
- iii) निविदा और अनुबंध प्रबंधन।
- iv) जीएफआर 2017 का कार्यान्वयन।
- v) संगठनात्मक वित्तीय प्रथाओं पर जीएफआर 2017 के प्रभावों के लिए
- vi) वित्तीय प्रबंधन और शासन

**2. सेवानिवृत्त अधिकारियों के लिए कार्यक्रम-** कार्य से सेवानिवृत्त जीवन में एक नया अध्याय शुरू करती है। यह कई वर्षों के करियर में होने वाले कुछ अन्य बदलावों से भिन्न है। बहुत सारी चिंताएँ होती हैं, उनमें वित्तीय और सामाजिक चिंताएँ प्रमुख होती हैं, जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। कई वर्षों की व्यस्त कार्य-सूची के बाद, अचानक, कर्मचारी को अपने जीवन में एक सर्वव्यापी शून्यता महसूस होती है। इस चरण को पार करने के लिए कर्मचारी का मार्गदर्शन करना और उसके अनुभव और ऊर्जा को समाज की भलाई के लिए पुनर्निर्देशित करना अपने आप में एक कला है। सेवानिवृत्त होने वाले व्यक्ति के पास सभी के लाभ के लिए और इस प्रकार स्वयं के लिए भी योगदान करने के कई रास्ते होते हैं। हालाँकि, सेवानिवृत्ति के बारे में मानसिकता कई नकारात्मक विचारों से भी जुड़ी है। संगठनों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे सेवानिवृत्त होने वाले व्यक्ति की देखभाल करें, जिससे वे सेवानिवृत्ति के बारे में व्यापक दृष्टिकोण अपना सकें और उन्हें जीवन के नए चरण का प्रभार लेने के लिए आंतरिक नियंत्रण प्राप्त करने में मदद मिल सके, जिसमें प्रकृति व्यक्ति को आगे बढ़ा रही है।

सेवानिवृत्त अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय बीमा अकादमी द्वारा प्रस्तावित सबसे प्रसिद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम में से एक है। पिछली दो तिमाहियों के दौरान संगठन से सेवानिवृत्त/सेवानिवृत्त होने वाले 05 अधिकारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

### 3. पूछताछ करने में आईओ/पीओ की भूमिका -

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत पूछताछ करने में आईओ/पीओ की भूमिका पर प्रशिक्षण कॉलेज ऑफ इंश्योरेंस (सीओआई), III, मुंबई में आयोजित किया गया, जिसमें 11 अधिकारियों ने भाग लिया।

### 4. चार्टर्ड एकाउंटेंट्स के लिए प्रवेश प्रशिक्षण कार्यक्रम

निगम ने वर्ष 2022 और 2023 में सहायक प्रबंधक कैडर में चार्टर्ड एकाउंटेंट की भर्ती की थी। स्केल I के अधिकारियों को कॉलेज ऑफ इंश्योरेंस (सीओआई), III, मुंबई में तीन सप्ताह का प्रवेश प्रशिक्षण दिया गया था। प्रशिक्षण में बीमा और पुनर्बीमा के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया, सीए को पुनर्बीमा व्यवसाय की मूल बातें, व्यवसाय के विभिन्न वर्ग, अनुपात और गैर-अनुपातिक संधियों के लिए पुनर्बीमा खातों को समझाना, पुनर्बीमा व्यवसाय में वित्त विभाग की भूमिका और कार्यप्रणाली को समझाना शामिल था।



### 5. राष्ट्रीय बीमा अकादमी में विभिन्न प्रशिक्षण:-

इंजीनियरिंग बीमा का प्रबंधन (गैर-जीवन), संपत्ति बीमा का प्रबंधन (अग्नि) (गैर-जीवन), मोटर अंडरराइटिंग कौशल (गैर-जीवन) और डेटा एनालिटिक्स और मशीन लर्निंग (गैर-जीवन) के लिए कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रम हैं जिनमें पिछली दो तिमाहियों के दौरान अधिकारियों ने भाग लिया।

● मनाली मधुसुदन पोटे, उप प्रबंधक

जीआइसी री स्थापना दिवस 2023



सकल प्रीमियम  
₹19,679.85 करोड़

नेट वर्थ  
₹71,376.53 करोड़

सॉल्वेंसी अनुपात  
2.82

## सफलता के नये मानक



### 30 सितंबर 2023 को समाप्त अर्ध वार्षिक के लिए पुनरीक्षित वित्तीय परिणाम

( ₹ करोड़ में )

संख्या	विवरण	अर्ध वार्षिक	
		30.09.2023	30.09.2022
1	प्रीमियम आय (सकल)	19,679.85	19,122.45
2	कर पश्चात निवल लाभ/(हानि)	2,336.87	2,549.65
3	प्रदत्त साम्य शेयर पूंजी	877.20	877.20
4	नेट वर्थ ( प्रत्यक्ष मूल्य परिवर्तन खाते सहित )	71,376.53	60,585.14
5	कुल परिसम्पतियां	1,67,640.89	1,53,384.76
6	सॉल्वेंसी अनुपात	2.82	2.25

#### टिप्पणियाँ -

- ए) प्रीमियम आय अर्थात सकल लिखित प्रीमियम, पुनर्बीमा का सकल और लागू करों का निवल है।  
बी) ऊपर उल्लिखित विवरण सेबी ( लिस्टिंग एवं अन्य डिस्क्लोजर रिकायरमेंट्स ) विनियम, 2015 के विनियम 33 के अंतर्गत स्टॉक एक्सचेंज के साथ फाइल किये गए तिमाही तथा वर्ष के दौरान अब तक के वित्तीय परिणाम का विस्तृत प्रारूप का निष्कर्ष है।  
तिमाही तथा वर्ष के दौरान अब तक के वित्तीय परिणाम का विस्तृत प्रारूप स्टॉक एक्सचेंज की वेबसाइट्स ([www.bseindia.com](http://www.bseindia.com) एवं [www.nseindia.com](http://www.nseindia.com)) तथा निगम की वेबसाइट ([www.gicre.in](http://www.gicre.in)) पर उपलब्ध है।

मंडल निदेशकों के लिए और उनकी ओर से

हस्ताक्षर/-

एन. रामस्वामी

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

डीआईएन : 10337640

स्थान: मुंबई

दिनांक: 09.11.2023